सत्यमेव जयते

झारखण्ड गजट

साधारण अंक

झारखण्ड सरकार द्वारा प्रकाशित

17 चैत्र, 1938 (श०)

संख्या 11 राँची, बुधवार

6 अप्रैल, 2016 (ई०)

विषय-सूची

पृष्ठ

भाग 1–नियुक्ति, पदस्थापन, बदली, शक्ति, छुट्टी और अन्य वैयक्तिक सूचनाएँ। 24-31

भाग 1–क–स्वयंसेवक गुरुओं के समादेष्टाओं के आदेश ।

भाग 1–ख--मैट्रिकुलेसन,आई.ए.,आई.एस-सी., बी.ए, बी.एस.सी.,एम.ए.,एम.ए.सी., लॉ भाग1 और 2, एम.बी.बी.एस.,बी.सी.ई.,डिप०-इन-एड., मुख्तारी परीक्षाओं के परीक्षाफल, कार्यक्रम छात्रवृत्ति प्रदान आदि।

भाग 1-ग–शिक्षा संबंधी सूचनाएँ, परीक्षाफल आदि।

भाग-2–झारखण्ड राज्यपाल और कार्याध्यक्षो द्वारा

भाग-2–झारखण्ड राज्यपाल और कार्याध्यक्षो द्वारा निकले गये विनियम, आदेश, अधिसूचनाएँ एवं नियम आदि ।

भाग 3–भारत सरकार, पश्चिम बंगाल सरकार और उच्च न्यायालय के आदेश, अधिसूचनाएं और नियम 'भारत गज़ट' और राज्य गज़टों से उद्धरण।

पृष्ठ

भाग-4–झारखण्ड अधिनियम

भाग-5–झारखण्ड विधान-सभा में पुरःअस्थापित विधेयक, उक्त विधान-मंडल में उप-स्थापित या उपस्थापित किए जानेवाले प्रवर समितियों के प्रतिवेदन और उक्त विधान-मंडल में पुरःस्थापन के पूर्व प्रकाशित विधेयक ।

भाग-7–संसद के अधिनियम जिन पर राष्ट्रपति एम.एस.और की अनुमति मिल चुकी है ।

भाग-8- भारत की संसद में पुरःस्थापित विधेयक, संसद में उपस्थित प्रवर समितियों के प्रतिवेदन और संसद में पुरःस्थापन के पूर्व प्रकाशित विधेयक।

भाग-9- विज्ञापन ---

भाग-9-क–वन विभाग की नीलामी संबंधी सूचनाएं

भाग-9-ख–निविदा सूचनाएँ, परिवहन सूचनाएँ, न्यायालय सूचनाएँ और सर्वसाधारण सूचनाएँ इत्यादि।

पूरक-- ... ...

पूरक "अ" ... ...

भाग 1

नियुक्ति, पदस्थापन, बदली, शक्ति, छुट्टी और अन्य वैयक्तिक सूचनाएँ

झारखण्ड विधान सभा सचिवालय ।

अधिसूचना

20 मार्च, 2015

संख्या-01स्था०-01/15-1020--वि0स0। सभा सचिवालय के स्वीकृत्यादेश संख्या-857, दिनांक-1303.2015 के आलोक में माननीय अध्यक्ष, झारखण्ड विधान सभाके आप्त सचिव के अस्थायी (सावधिक) पद पर डा० राजीव कुमार (वाहय व्यक्ति) को वेतनमन- 9300-34800/ - रु० + ग्रेड पे- 5400/- रु० के प्रथम प्रक्रम- 20280/- रु० एवं उसपर अनुमान्य महंगाई भत्ते पर दिनांक 1 मार्च, 2015 के पूर्वा० से 29 फरवरी, 2016 के अप० तक अथवा माननीय अध्यक्षमहोदय के इच्छापर्यन्त (इनमे जो पहले घटे) तक सेवा विस्तारित की जाती है ।

माननीयअध्यक्ष, झारखण्ड विधान सभा के आदेश से,
वीरेंद्र कुमार,
अवर सचिव,
झारखण्ड विधान सभा, राँची।

अधिसूचना

27 फरवरी, 2015

संख्या-लो०ले०स०-01/2015-104--वि०स०|अतद द्वारा सर्वसाधारण की जानकारी के लिए प्रकाशित किया जाता है की अधिसूचना संख्या-76,दिनांक-23 फरवरी, 2015 के क्रम में श्री इरफ़ान अंसारी,स० वि० स० को झारखण्ड विधान-सभा की लोकलेखा समिति का सदस्य मनोनीत किया जाता है |

अध्यक्ष, झारखण्ड विधान-सभा के आदेश से,
सुशील कुमार सिंह,
प्रभारी सचिव
झारखण्ड विधान-सभा,राँची |

अधिसूचना

16 मार्च,2015 ई० |

संख्या-स०उ०स०-01/2015/105--वि०स०| अतद द्वारा सर्वसाधारण की जानकारी के लिए प्रकाशित किया जाता है की झारखण्ड विधान-सभा की प्रक्रिया एवं कार्य संचालन के नियम-241(1)के अधीन माननीय अध्यक्ष,झारखण्ड विधान-सभा ने माननीय सदस्य श्री विरंची नारायण को सकारी उपक्रमों संबंधी समिति के सदस्य से नियुक्त कर उनके स्थान पर माननीय सदस्य श्री राधा कृष्ण किशोर को शेष अवधि के लिए सरकारी उपक्रमों संबंधी समिति का सदस्य मनोनीत किया है |

अध्यक्ष,झारखण्ड विधान-सभा के आदेश से,
सुशीलकुमार सिंह,
प्रभारी सचिव
झारखण्ड विधान-सभा,राँची |

अधिसूचना

2 मार्च, 2015 ई०

संख्या-प्राक्कलन-01/2015-106--वि०स०| एतद द्वारा सर्वसाधारण की जानकारी के लिए प्रकाशित किया जाता है की माननीय अध्यक्ष झारखंड विधान-सभा द्वारा श्री चम्पई सोरेन, स०विस० को झारखण्ड विधान सभा की प्राक्कलन समिति का सदस्य मनोनीत किया गया है |

यह मनोनयन अधिसूचना की तिथि से प्रभावी होगा |

अध्यक्ष ,झारखंड विधान-सभा के आदेश से,
सुशील कुमार सिंह,
प्रभारी सचिव
झारखंड विधान-सभा, रांची |

अधिसूचना

19 मार्च, 2015 ई०

संख्या-अ०पि०क०व०क०स०-01/14-121--वि०स०| सभा सचिवालय की अधिसूचना संख्या-**अ०पि०व०क०स०-01/14-54, दिनांक-23.02.15** के क्रम में सर्वसाधारण की जानकारी के लिए प्रकाशित किया जाता है कि श्री बादल,स०विस० को झारखण्ड विधान सभा के अल्पसंख्यक, पिछड़ा एवं कमजोर वर्ग कल्याण समिति के सदस्य के रूप में मनोनीत किया जाता है |

माननीय अध्यक्ष ,झारखंड विधान-सभा के आदेश से,
सुशील कुमार सिंह,
प्रभारी सचिव
झारखंड विधान-सभा,रांची |

अधिसूचना

16 मार्च, 2015

संख्या-प्राक्कलन-01/2015/138--वि०स०|एतद द्वारा ज्ञापांक संख्या-01/2015/78, दिनांक 23 फरवरी, 2015 के क्रम में सर्वसाधारण की जानकारी के लिए प्रकाशित किया जाता है की माननीय अध्यक्ष झारखण्ड विधान-सभा के द्वारा श्री विरंची नारायण स०वि०स०को श्री राधा कृष्ण किशोर,स०वि०स० के बदले झारखण्ड विधान-सभा की प्राक्कलन समिति का सभापति अधिसूचना निर्गत होने के तिथि से शेष अवधि तक के लिए मनोनीत किया गया है |

अध्यक्ष,झारखण्ड विधान-सभा के आदेश से,
सुशील कुमार सिंह,
प्रभारी सचिव
झारखण्ड विधान-सभा,राँची |

अधिसूचना

7 अगस्त, 2014 ई०

संख्या-म०बा०स०-01/2014-1571--वि०स०| एतद् द्वारा सर्वसाधारण की जानकारी के लिए प्रकाशित किया जाता है की झारखण्ड विधान सभा की प्रक्रिया तथा कार्य संचालन के नियम-264 के अधीन माननीय अध्यक्ष ,झारखंड विधान-सभा ने झारखण्ड विधान सभा की महिला एवं बाल विकास समिति का गठन वर्ष 2014-15 के लिये निम्न प्रकार से किया है:-

1	श्रीमती विमला प्रधान	स०वि०स०	सभापति
2	श्रीमती सीता सोरेन	स०वि०स०	सदस्य
3	श्रीमती कुंती देवी	स०वि०स०	सदस्य
4.	श्रीमती मेनका सरदार	स०वि०स०	सदस्य

श्रीमती विमला प्रधान, स०वि०स० इस समिति के सभापति तथा सभा सचिव इसके सचिव होंगे | समिति का कार्यकाल अधिसूचना निर्गत होने की तिथि से नई समिति के गठन तक होगा |

अध्यक्ष ,झारखंड विधान-सभा के आदेश से,

सुशील कुमार सिंह,
प्रभारी सचिव
झारखंड विधान-सभा, रांची |

अधिसूचना

7 अगस्त 2014, ई० |

संख्या-वि०नि०अनु०स०-01/13-1579--वि०स०|एतद द्वारा सर्वसाधारण की जानकारी के लिए यह प्रकाशित किया जाता है की झारखण्ड विधान-सभा की प्रक्रिया तथा कार्य संचालन के नियम 223(1)के अधीन प्रदत शक्तियों का पर्योग करते हुए माननीय अध्यक्ष झारखण्ड विधान-सभा द्वारा विधायक निधि अनुश्रवण समिति का गठन वर्ष 2014-15 के लिए निम्न प्रकार है:-

1.श्री अरविन्द कुमार सिंह,	स०वि०स०	सभापति
2.श्री रामदास सोरेन,	स०वि०स०	सदस्य
श्री निर्भय कुमार शाहबादी,	स०वि०स०	सदस्य
4.श्री राजेश रंजन,	स०वि०स०	सदस्य

श्री अरविन्द कुमार सिंह इस समिति के सभापति एवं सभासचिव इसके सचिव होंगे |समिति का कार्यकाल अधिसूचना निर्गत की तिथि से समिति के अगले गठन तक होगा |

अध्यक्ष,झारखण्ड विधान-सभा के आदेश से,
सुशील कुमार सिंह,
प्रभारी सचिव
झारखण्ड विधान-सभा, राँची |

अधिसूचना

7 अगस्त, 2015 ई०

संख्या-वि०पु०स०-01/13-1593--वि०स०| एतद द्वारा सर्वसाधारण की जानकारी के लिए प्रकाशित किया जाता है की झारखण्ड विधान सभा की प्रक्रिया तथा कार्य संचालन नियमावली के नियम-223(1) के अधीन माननीय अध्यक्ष महोदय ने झारखण्ड विधान सभा की विश्तःपन एवं पुनर्वास समिति का गठन वर्ष 14-15 के लिए निम्न प्रकार से किया है:-

1	**श्री हरिनारायण राय**	**स०वि०स०**	**सभापति**
2	**श्री मथुरा प्रसाद महतो**	**स०वि०स०**	**सदस्य**
3	**श्री मिस्त्री सोरेन**	**स०वि०स०**	**सदस्य**
4	**श्री माधव लाल सिंह**	**स०वि०स०**	**सदस्य**

श्री हरिनारायण राय स०वि०स० इस समिति के सभापति एवं सभा सचिव इसके सचिव होंगे | समिति का कार्यकाल अधिसूचना निर्गत होने की तिथि से समिति के अगले गठन तक होगा |

माननीय अध्यक्ष ,झारखंड विधान-सभा के आदेश से,
सुशील कुमार सिंह,
प्रभारी सचिव
झारखंड विधान-सभा,रांची |

अधिसूचना

7 **अगस्त,** 2014 **ई०**

संख्या-अ०जा०अ०ज०जा०क०स०-01/13- 1597--वि०स०| एतद् द्वारा सर्वसाधारण की जानकारी के लिए प्रकाशित किया जाता है की झारखण्ड विधान सभा की प्रक्रिया तथा कार्य संचालन के नियम-259 **के अधीन माननीय अध्यक्ष ,झारखंड विधान-सभा ने झारखण्ड विधान सभा की अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति कल्याण समिति का वर्ष 14-15 के लिए गठन निम्न प्रकार से किया है:-**

1	**श्रीमती गीता कोड़ा**	**स०वि०स०**	**सभापति**
2	**श्री रामचन्द्र सहिस**	**स०वि०स०**	**सदस्य**
3	**श्री साइमन मरांडी**	**स०वि०स०**	**सदस्य**
4.	**श्री रामचन्द्र बैठा**	**स०वि०स०**	**सदस्य**

5. श्री रामचन्द्र बैठा स०वि०स० सदस्य

श्रीमती गीता कोड़ा, स०वि०स० इस समिति के सभापति तथा सभा सचिव इसके सचिव होंगे| समिति का कार्यकाल समिति के कार्यकाल समिति के अगले के गठन तक के लिये होगा |

अध्यक्ष ,झारखंड विधान-सभा के आदेश से,
सुशील कुमार सिंह,
प्रभारी सचिव
झारखंड विधान-सभा,रांची |

अधिसूचना

17 **मार्च, 2016 ई०।**

संख्या-वि०स०वि०-09/2016-2264–वि०स०। निम्नलिखित विधेयक जो झारखण्ड विधान-सभा में दिनांक 16 **मार्च, 2016 को पुरःस्थापति हुआ था । झारखण्ड विधान-सभा की प्रक्रिया तथा कार्य संचालन नियमावली के नियम-68 के अन्तर्गत उद्देश्य और हेतु सहित प्रकाशित किया जाता है।**

विधेयक के भार साधक सदस्य के नाम के साथ जैसा कि विधेयक के अन्त में दिखलाया गया है और इसके बाद लकीर देकर झारखण्ड विधान-सभा के सचिव के नाम के साथ जैसा संलग्न प्रति में दिया हुआ है। प्रकाशित करें।

झारखंड विधान-सभा के आदेश से,
बिनय कुमार सिंह,
प्रभारी सचिव
झारखण्ड विधान-सभा,राँची।

LAW DEPARTMENT

THE JHARKHAND ANCIENT MONUMENTS AND ARCHAEOLOGICAL SITES, REMAINS AND ART TREASURE BILL, 2016

Contents:-
Section

1. Short title, extent and commencement.

2. Definitions- In this Act, unless there is anything repugnant in the subject or context

3. Power of State Government to declare ancient monuments etc. to be protected monuments and areas.

4. Acquisition of rights in a protected monuments.

5. Preservation of protected monument by agreement.

6. Persons competent to exercise powers of owners under section 5, in respect of protected monuments, when owner is under disability or when it is a village property.

7. Application of endowment to repair a protected monument.

8. Failure or refusal to enter into an agreement.

9. Power to make order prohibiting contravention of agreement under section 5.

10. Enforcement of agreement.

11. Purchasers at certain sales and persons claiming through owner bound by instrument executed by owner

12. Acquisition of protected monument.

13. Maintenance of certain protected monument.

14. Voluntary contributions.

15. Protection of place of worship from misuse, pollution or desecration.

16. Relinquishment of State Government rights in a monument.

17. Right of access to protected monuments

18. Restrictions on enjoyment of property rights in protected area.

19. Power to acquire a protected area.

20. Excavation in protected areas.

21. excavations in areas other than protected areas.

22. Compulsory acquision of antiquities, etc., discovered during excavation operations.

23. Excavations etc, for archaeological purposes.

24. Power of State Government to control moving of antiquities.

25. Acquisition of antiquities by State Government.

26. Compensation for loss or damage

27. Assessment of value or compensation.

28. Delegation of powers.

29. License for dealing in antiquities.

30. Bar to sell, etc. of antiquities.

31. Authority to make enquiry and take photograph of antiquity.

32. Declaration as to any antiquity.

33. Report regarding loss of antiquity

34. Powers of entry, search, seizure etc.

35. Powers to determine whether or not an article, etc. is antiquity or art treasure.

36. Penalties.

37. Jurisdiction to try offences.

38. Certain offences to be cognizable.

39. Special provision regarding fine.

40. Recovery of amount due to State Government.

41. Ancient monuments etc. no longer requiring protection.

42. Power to correct mistake etc.

43. Protection of action taken under the Act.

44. Power to make rules.

45. Act not applicable to certain ancient monuments or archaeological sites and remain or antiquities.

THE JHARKHAND ANCIENT MONUMENT AND ARCHAEOLOGICAL SITES, REMAINS AND ART TREASURE BILL 2016

A BILL

TO PROVIDE FOR PRESERVATION OF ANCIENT MONUMENTS AND ARCHAEOLOGICAL SITES AND REMAINS OTHER THAN THOSE DECLARED BY OR UNDER LAW MADE BY PARLIAMENT TO BE OF NATIONAL IMPORTANCE FOR THE REGULATION OF ARCHAEOLOGICAL EXCAVATION AND FOR THE PROTECTION OF ANTIQUITIES IN THE STATE OF JHARKHAND.

Preamble- Be it enacted by the Jharkhand Legislature in the 67th year of the Republic of India as follows:-

1. **Short title, extent and commencement-**
   a) This Act may be called the Jharkhand Ancient Monuments and Archaeological Sites, Remains and Art Treasures Act., 2016.
   b) It extends to the whole of the State of Jharkhand.
   c) It shall come into force on such date as the State Government may by notification in the Official Gazette, appoint.

2. **Definitions- In this Act, unless there is anything repugnant in the subject or context-**
   a) "Ancient Monument" means any structure, erection or monument or any tumulus or place of internment, or burning or nay cave, stone sculpture, inscription or monolith, which is of historical, archaeological or artistic interest , and which has been in existence for not less than one hundred years and includes-
      i) the remains thereof,
      ii) the site thereof,
      iii) the portion of land adjoining such site which may be necessary or required for the preservation, protection, upkeep and maintenance of the same; and
      iv) the means of access thereto and convenient inspection and repairs thereof;

   b) "Antiquity" includes-
      i) any coin, sculpture, painting, epigraph, or other work of art or craftsmanship;
      ii) any article, object or thing detached form a building or cave;
      iii) any article, object or thing illustrative of science, art, crafts, literature, religion, customs, morals or politics of bygone ages;
      iv) any article, object or thing of historical interest; and
      v) any article, object or thing which the State Government may by reason of its historical or archaeological association by notification in the Official Gazette, declare to be any antiquity for the purpose of this ordinance and which has been in existence for not less than one hundred years and
      vi) any manuscript, record or other document which is of scientific, historical, literary or aesthetic value and which has been in existence for not less than seventy five years.

c) "Art teasure" means any human work of art, not being an antiquity declared by the state government by notification on the Official Gazette, to be an art treasure for the purposes of this Act having regard to ist historical and aesthetic value.

Provided that no declaration under this clause shall be made in respect of any such work of art so long as the author thereof is alive:

d) "Archaeological Officer" means any officer of the Department of Archaeology and Museums of the State Government not below such rank as the State Government may from time to time prescribe:

e) "Archaeological site and remains" any area which contains or is reasonably believed to contain ruins or relics of historical or archaeological importance and which have been is existence for not less than one hundred years and includes-

i) such portion of lands as adjoining the area may be required for fencing or covering in or otherwise preserving it; and

ii) the means of access to, and convenient inspection of the area;

f) "Director" means Director of Archaeology and Museums of the State Government and includes any officer authorized by the State Government to perform the duties of the Director;

g) "Maintain" with its grammatical variations and cognate expressions includes the fencing, covering, repairing, restoring and cleaning of a protected monument and the doing of any act which may be necessary for the purpose of preserving a protected monument or creating an ambience conducive to it or securing convenient access thereto.

h) "Owner" includes-

(i) a joint owner invested with powers of management on behalf of himself and other joint owners and the successor -in-title of any such owner; and

(ii) any manager or trustee exercising powers of management and the successor in office of any such manager or trustee;

i) "Prescribed" means prescribed by rules made under this Act.

j) "Protected area" means any archaeological site and remains which is declared to be a protected area by or under this act.

k) "Protected monument" means ancient monument which is declared to be a protected monument by or under this Act and

l) "State Government" means the State Government of Jharkhand.

PROTECTION OF ANCIENT MONUMENTS AND ARCHAEOLOGICAL SITES AND REMAINS

3. Power of State Government to declare ancient monuments etc. to be protected monuments and areas:-

(1) Where the State Government is of opinion that any ancient monument or archaeological site and remains requires protection under this Act, it may by notification in the Official Gazette, give two months notice of its intention to declare such ancient monument or archaeological site and remains to be a protected monument or a protected area as the case may be; and a copy of every such notification shall be affixed in a conspicuous place near the monument or the site and remains, as the case may be;

(2) Any person interest in any such ancient monument or archaeological site and remains may, within two months after the issue of the notification, object to the declaration of the monuments or the archaeological site and remains, to be a protected monument or a protected area,

(3) On the expiry of the said period of two months, the State Government may, after considering the objections, if any, received by it, declare by notification in the Official Gazette, the ancient monuments or the archaeological site and remains, as the case may be to be a protected monument or a protected area.

(4) A notification published under sub-section (3) shall, unless and until it is withdrawn by conclusive evidence of the fact that the ancient monument or the archaeological site and remains to which it relates is a protected monument or a protected area for the purpose to this Act.

4. Acquisition of rights in a protected monuments :-

(1) The Director may, with the sanction of the State Government, purchase or take a lease of or accept a gift or bequest of any protected monument.

(2) Where a protected monuments is without an owner, the Director may, by notification in the Official Gazette, assume the guardianship of the monument.

(3) The Owner of any protected monument may, by written instrument constitute the Director the guardian of the monument and the Director may, with the sanction of the State Government, accept such guardianship.

(4) When the Director has accepted the guardianship of a monument under sub section (3), the owner shall, except as expressly provided in this Act, have the same estate, right, title or interest in and to the monument as if the Director had not been constituted a guardian thereof; and the provision of this Act relating to the agreement executed under section 5 shall apply to the written instrument executed under sub-section (3).

(5) Nothing in this section shall affect the use of any protected monument for customary religious observances.

5. Preservation of protected monument by agreement :-

(1) The Director, when so directed by the State Government, shall propose to the owner of the protected monument to enter into an agreement with the State Government within a specified period for the maintenance of the monument.

(2) An agreement under this section may provide for all or any of the following matter, namely:-

(a) the maintenance of the monument;

(b) the custody of the monument and the duties of any person who may be employed to look after it;

(c) the restriction of the owner's right :-

(i) to use the monument for any purpose

(ii) to charge any fee for entry into, or inspection of the monument

(iii) to destroy, remove, alter or deface the monument or

(iv) to build on or near the site of the monument;

(d) the facilities of access to be permitted to the public or any section thereof or to archaeological officer or other officer or authority authorized by the State Government to inspect or maintain the monument;

(e) the notice to be given to the State Government in case the land on which the monument is situated or any adjoining land is offered for sale by the owner, and the right to be reserved to the Government to purchase such land, or any specified portion of such land, at its market value;

(f) the payment of any expenses incurred by the owner or by the Government in connection with the maintenance of the monument;

(g) the proprietary or other rights which are to vest with the State Government is respect of the monument when any expenses are incurred by the State Government in connection with the maintenance of the monument;

(h) the appointment of any authority to decide any dispute arising out of the agreement; and

(i) the matter connected with the maintenance of the monument which is a proper subject of agreement between the owner and the State Government;

(3) The State Government or the owner may, at any time, after the expiration of three years from the date of execution of an agreement under this section, terminate it on giving six months notice in writing to the other party:

Provided that when the agreement is terminated by the owner, he shall pay to the State Government the expenses, if any, incurred by it on the maintenance of the monument during the five years immediately preceding the termination of the agreement or, if the agreement has been in force for a shorter period, during the period the agreement was in force.

(4) An agreement under this section shall be binding on any person claiming to be the owner of the monument to which it relates, from through or under a party by whom or on whose behalf the agreement was executed.

6. Persons competent to exercise powers of owners under section 5, in respect of protected monuments, when owner is under disability or when it is a village property :-

(1) If the owner of a protected monument is unable, by reason of minority, or other disability, to act for himself, the person legally competent to act on his behalf may exercise the powers conferred upon an owner by section 5.

(2) In the case of a protected monument which is a village property, the headman or other village office exercising powers of management over such property may exercise the powers conferred upon an owner by section 5.

(3) Nothing in this section shall be deemed to empower any person not being of the same religion as the person on whose behalf he is acting to make or execute an agreement relating to a protected monument which or any part of which is periodically used for the religious worship or observance of that religion.

7. Application of endowment to repair a protected monument :-

(1) If any owner or other person competent to enter into an agreement under section 5 for the maintenance of a protected monument refuses or fails to enter into such an agreement, and if any endowment has been created for the purpose of keeping such monument in repair or for that purpose among others, the State Government may institute a suit in the Court of the District Judge or if the estimated cost of repairing the monument does not exceed fifty thousand rupees, may make an application to the District Judge, for the proper application of such endowment or part thereof.

(2) On the hearing of an application under sub- section (1) the District Judge may summon and examine the owner and ay person whose evidence appears to him necessary and may pass an order for the proper application of the endowment or any part thereof any any such order may be executed as if it was a decree of the Civil Court.

8. Failure or refusal to enter into an agreement :-

(1) If any owner or other person competent to enter into an agreement under section 5 for the maintenance of a protected monument refuses or fails to enter into such an agreement, the State

Government may make an order providing for all or any of the matters specified in sub-section (2) of section 5 and such order shall be binding on the owner or such other person and on every person claiming title to the monument from, through or under the owner or such other person.

(2) Whether an order made under sub- section (1) provides that the monument shall be maintained by the owners or others person competent to enter into an agreement, all reasonable expenses for the maintenance of the monument shall be payable by the State Government.

(3) No order under sub- section (1) shall be made unless the owner or other person has been given an opportunity of making a representation in writing against the proposed order.

9. Power to make order prohibiting contravention of agreement under section 5 :-

(1) If the Director apprehends that the owner or occupier of a protected monument intends to destroy, remove, alter, deface, imperil or misuse the monument or to build on or near the site thereof in contravention of the terms of a agreement executed under section 5, the Director may, after giving the owner or occupier an opportunity of making a representation in writing make an order prohibiting any such contravention of the agreement.

Provided no such opportunity need be given in any case when the Director, for reasons to be recorded, is satisfied that it is expedient or practicable to do so.

(2) Any person aggrieved by an order under this section may appeal to the State Government within such time and in such manner as may be prescribed and the decision of the State Government shall be final.

10. Enforcement of agreement :-

(1) If an owner or other person who is bound to maintain a monument by an agreement executed under section 5 refuses or fails within such reasonable time as the director may fix, to do any act which in the opinion of the director is necessary for the maintenance of the monument the Director may authorize any person to do any such act, and the owner or other person shall be liable to pay the expenses of doing any such act or such portion of the expenses as the owner may be liable to pay under the agreement.

(2) If any dispute arises regarding the amount of expenses payable by the owner or other person under sub-section (1), it shall be referred to the State Government whose decision shall be final.

11. Purchasers at certain sales and persons claiming through owner bound by instrument executed by owner :-

Every person who purchases, at a site for arrears of land revenue or any other public demand, any land on which is situated a monument is respect of which any instrument has been executed by the owner for the time being under section 4 or section 5 and every person claiming any title to a

monument from, through or under on owner who executed any such instrument, shall be bound by such instrument.

12. Acquisition of protected monument :-

If the State Government apprehends that a protected monument is in danger of being destroyed, injured, misused or allowed to fall into decay, it may acquire the protected monument under the provision of the Land Acquisition Act, 1894 (I of 1894), as if the maintenance of the protected monument were a public purpose within the meaning of that Act.

13. Maintenance of certain protected monument:-

(1) The State Government shall maintain every monument which has been acquired under section 12 or in respect of which any of the rights mentioned in section 4 has been acquired.

(2) When the Director has assumed the guardianship of a monument under section 4, he shall, for the purpose of maintaining such monument, have access to the monument at all reasonable times, by himself and by his agents subordinates and workmen for the purpose of inspecting the monument and for the purpose of bringing such materials and doing such acts as he may consider necessary or desirable for the maintenance thereof.

14. Voluntary contributions :-

The Director may receive voluntary contributions towards the cost of maintaining a protected monument and may give such general or special directions as he considers necessary for the management and application of the contribution so received by him.

Provided that no contribution received under section shall be applied to any purpose other than the purpose for which it was contributed.

15. Protection of place of worship from misuse, pollution or desecration :-

(1) A protected monument maintained by the State Government under this Act which is a place of worship or shrine shall not be used for any purpose inconsistent with its sanctity.

(2) Where the State Government has acquired a protected monument under section 12, or where the Director has purchased or taken a lease or accepted a gift or bequest or assumed guardianship of a protected monument under section 4, and such monument or any part thereof is used for religious worship or observances by any community, the Director shall make due provision for the protection of such monument or part thereof, from pollution or desecration :-

(a) by prohibiting the entry therein, except in accordance with the conditions prescribed with the concurrence of the persons, if any in religious charge of the said monument or part thereof, of any person not entitled so to enter by the religious usage of the community by which the monument or part thereof is used or

(b) by taking such other action as Director may think necessary in this behalf.

16. Relinquishment of State Government rights in a monument :-

With the sanction of the State Government, Director may :-

(a) Where rights have been acquired by the Director in respect of any monument under this act by virtue of any sale, lease, gift or will relinquish, by notification in the Official Gazette, the rights so acquired to the person who would for the time being be the owner of the monument if such rights had not been acquired ; or

(b) Relinquish any guardianship of a monument which he has assured under this Act.

17. Right to access to protected monuments :-

Subject to the provisions of this Act and the rules made there under, the public shall have a right of access to any protected monument.

PROTECTED AREA

18. Restrictions on enjoyment of property rights in protected area :-

(1) No person, including the owner or occupier of a protected area, shall construct any structure or building within protected area or carry on ay mining, quarrying, excavation, blasting or any operation of a like nature in such area or utilize such area or any part thereof in any other manner without the permission of the State Government:

Provided that nothing in this sub-section shall be deemed to prohibit the use of any such area or part thereof for the purpose of cultivation if such cultivation does not involve the digging of more than one foot of soil from the surface.

(2) The State Government may, by order, direct that any structure or building constructed by any person within a protected area in contravention of the provision of sub-section (1) shall be removed within a specified period and, if the person refuses or fails to comply with the order, the Director may cause the building to be removed and the person shall be liable to pay the cost of such removal.

19. Power to acquire a protected area :-

If the State Government considers necessary for sake of protecting the monument/protected site/area, it may acquire such area under the provisions of the Land Acquisition Act, 1894 (I of 1894) in the interest of public purposes.

20. Excavation in protected areas :-

An archaeological officer or an officer authorized by him in this behalf or any person holding a licence granted in this behalf under this Act (hereinafter referred to as the licensee) may, after giving notice in writing to the Director and the owner, enter upon and make excavations in ay protected area if it is not inconsistent with the provisions of section 24 of the Ancient Monuments Provisions, Archaeological Sites and Remains Act, 1958 (24, 1958).

21. Excavations in areas other then protected areas :-

Subject to the provisions of section 24 of the Ancient Monuments and Archaeological Sites and Remains Act, 1958 (XXVI of 1959), where an archaeological officer has reason to believe that any area not being a protected area contains ruins or relic of historical or archaeological importance, he or an office authorized by him in this behalf may, after giving notice in writing to the Director and the owner, enter upon and make excavations in the area if it is not inconsistent with the provision of section 24 of the Ancient Monuments and Archaeological sites and Remains Act, 1958 (24, 1958)

22. Compulsory acquisition of antiquities, etc. discovered during excavation operations :-

(1) Whereas a result of any excavations made in any area under section 20 or section 21, any antiquates are discovered, the archaeological officer or the license, as the case may be, shall -

(a) as soon as practicable, examine such antiquities and submit a report to the State Government in such manner and containing such particulars as may be prescribed.

(b) At the conclusion of the excavation operations, give notice in writing to the owner of the land from which such antiquities have been discovered, as to the nature of such antiquities.

(2) Until an order for the compulsory acquisition of any such antiquities is made under sub-section (3), the archaeological officer or the licensee, as the case may be, shall keep them in such safe custody as he may deem fit.

(3) On receipt of a report under sub-section (1), the State Government may make an order for the compulsory acquisition of any such antiquities at their market value.

(4) When an order for the compulsory purchase of any antiquity is made under sub-section (2), such antiquities shall vest with the State Government with effect from the date of order.

23. Excavation etc, for archaeological purposes :-

Save as provided in the section 21 no archaeological officer or other authority shall undertake, or authorize any person to undertake, any excavation or other like operation for archaeological purposes in any area which is not a protected area except with the previous approval of the State Government and in accordance with such rules or directions, if any, as the State Government may make or give in this behalf.

PROTECTION OF ANTIQUITIES

24. Power of State Government to control moving of antiquities :-

(1) (i) If the State Government considers that any antiquity or class of antiquities ought not to be moved from the place where they are without their sanction, the State Government may, by notification in the Official Gazette, direct that any such antiquity or any class of such antiquities shall not be mover except with the written permission of the Director.

(ii) Every application for permission under sub- section (1) shall be in such form and contain particulars as may be prescribed.

(iii) An appeal shall lie to the State Government against an order refusing permission whose decision shall be final.

(2) Any antiquity (sculpture, painting, inscription, ancient architectural member, manuscript, craft etc.) owned by any person within the limits of the state, shall be registered with the Deptt. of Archaeology for which an officer shall be nominated in the Deptt. Any person who keeps any antiquity in contravention of the provision of this Act shall be punishable with imprisonment upto three months or with fine upto twenty five thousand rupees or with both.

25. Acquisition of antiquities by State Government :-

(1) If the State Government apprehends that any antiquity mentiones in notification issued under sub-section (1) of Section 24, is in danger of being destroyed, removed, injured, misused or allowed to fall into decay or is of opinion that, by reason of its historical or archaeological importance, it is desirable to preserve such antiquity in a public place, the State Government may make an order or the compulsory acquisition of such antiquity and the director shall thereupon give notice to the owner of the antiquity to be acquired.

(2) Where a notice of compulsory acquisition is issued under sub-section (1) in result of any antiquity, such antiquity shall vest in the State Government with effect from the date of the notice.

(3) The power of the compulsory acquisition given by this section shall not extend to any image or symbol actually used for bonafide religious observances.

PRINCIPLE OF VALUATION AND COMPENSATION

26. Compensation for loss or damage :-

Any owner or occupier of land who has sustain any loss or damage or any diminution of profits form the land by reason of any entry on, or excavations in such land or the exercise of any other power conferred by this Act shall be paid compensation by the State Government for such loss, damage or diminution of profits.

27. Assessment of value of compensation :-

(1) The value of any property which the State Government is empowered to purchase at such value under this Act or the compensation to be paid by the State Government is respect of anything done under this Act; shall where any dispute arises in respect of such value or compensation be ascertained in the manner provided in section 3, 5, 8, to 34, 45, 46, 47, 51 and 52 of the Land Acquisition Act, 1894 (I of 1894). So far as they can be made applicable ;

Provided that, when making an enquiry under the Land Acquisition Act, the Collector shall be assisted by two assessors, one of who shall be a competent person nominated by the State Government within such time as may be fixed and one person nominated by the owner, or in case the owner fails to nominate an assessor within such time as may be fixed by the Collector in this behalf, by the Collector.

(2) The value of an antiquity which the State Government is empowered to acquire at such value under this Act, or the compensation to be paid by the State Government in respect of any thing done under this Act, where any dispute arise in respect of such value, the Collector shall be assisted by two assessors, one of whom shall be a competent person nominated by the owner, or by himself in case the owner fails to nominate an assessor within such time as may be fixed by the Collector in this behalf.

(3) Notwithstanding anything in sub-section (1) or in the Land Acquisition Act, 1894 (I of 1894), in determining the market value of any antiquity in respect of which an order for compulsory acquisition is made under sub -section (3) of section 22 or under sub-section (1) of section 25, any increase in the value of the antiquity by reason of its being of historical or archaeological importance shall not be taken into consideration.

MISCELLANEOUS

28. Delegation of powers :-

The State Government may, by notification in the Official Gazetteer, direct that any powers conferred on it by or under this Act shall, subject to such conditions as may be specified in the direction be

exercisable also by such officer or authority subordinate to the State Government as may be specified in the directions.

29. License for dealing in antiquities :-

No person shall deal in antiquities except under a license granted by the State Government.

30. Bar to sell, etc. of antiquities :-

Subject of provision of section 5 and 8 of the Antiquities and Art Treasures Act, 1972 (52 of 1972) no person shall without the permission of the State Government, sell, remove or make gift of any antiquity or art treasure of otherwise transfer its ownership.

31. Authority to make enquiry and take photograph of antiquity :-

An archaeological Officer, authorized by the State Government in this behalf may enquire into and take photograph of any antiquity in possession or custody of any person or religious institution or private museum.

32. Declaration as to any antiquity:-

(1) whosoever owns or is in possession, custody or control of any antiquity, on the date of the coming into force of this Act shall, within the period of sixty days from the commencement of this Act make a declaration to that effect to the Director, or to such authority and in such form as may be prescribed.

(2) Whosoever owns or comes in possession, custody or control of any antiquity after the coming into force of this Act, shall, within the period of fifteen days of owing or coming into possession custody or control of such antiquity make a declaration to that effect to the Director, or to such authority and in such form as may be prescribed.

Provided that the above provisions shall not apply to the officers of the Archaeological Survey of India.

33. Report regarding loss of antiquity:-

Whosoever owns or is in possession, custody or control of any antiquity shall in the event of its loss or destruction give intimation within seven days of the loss or destruction thereof to such authority and in such form as may be prescribed.

34. Powers of entry, search, seizure, etc :-

(1) Any person being an officer of Government, authorized on its behalf by the State Government, may with a view to securing compliance with the provisions of this Act or to satisfying himself that provisions of this Act have been complied with :-

(I) enter and search any place:

(II) seize any antiquity or art treasure in respect of which he suspects that any provision of this Act has been, is being, or is about to be contravened and thereafter take all measures necessary for securing the production of the antiquity or art treasure so seized in a Court and for its safe custody, pending such production.

(2) The Provision of section 100 (1), 100 (3), 100 (4) and 100 (5) of the code of the Criminal Procedure, 1973 relating to search and seizure shall, so far as may be applied to searches and seizures under this section.

35. Powers to determine whether or not an article, etc. is antiquity or art treasure :-

If any question arises whether any article, object or thing or manuscript, record or other document is or in not an antiquity or is or is not an art treasure for the purposes of this Act, it shall be referred to the Director, Archaeology and Museums Jharkhand to an officer authorized by him and the decision of the Director or such officer, as the case may be, on such question shall be final.

36. Penalties :-

(1) Whosoever:-

(I) destroys, removes, injures, alters, defaces, imperils or misuses a protected monument, or

(II) being the owner or occupier of a protected monument contravene an order made under sub- section (1) of section 8 or under sub -section (1) of section 9, or

(III) removes from a protected monument any sculpture , carving, image, bas relief, inscript or any other like object, or

(IV) does not act in contravention of sub- section (1) of section 18.

(V) fails to make the declaration as required under section 32, or

(VI) fails to give intimation as required under section 33, shall be punishable with imprisonment which may extend to three months or with fine which may extend to five thousand rupees or with both.

(2) Whosoever-

(i) deals in antiquity without license granted by the State Government, or

(ii) sells, removes or makes gift of any antiquity or art treasure or otherwise transfers its ownership, without the permission of the State Government, or

(iii) Commits theft of any antiquity from any temple, archaeological site, private museum or any place of religious importance, shall be punishable with imprisonment which may extend to three years or with fine which may extend to fifty thousand rupees or with both.

(3) Any person who moves any antiquity in contravention of a notification issued under sub-section (1) of section 24 shall be publishable with fine which may extend to twenty five thousand rupees, and the court convicting a person of any such contravention may, by order, direct such person to restore the antiquity to the place from where it has been removed.

37. Jurisdiction to try offences :-

No court inferior to that of a magistrate of the second class shall try any offence under this Act.

38. Certain Offences to be cognizable :-

Notwithstanding anything contained in the code of Criminal Procedure 1973, an offence under clause (i) or clause (ii) of sub-section (1) and clause (iii) of sub-section 2 of section 36 shall be deemed to be a cognizable offence within the meaning of that code.

39. Special Provision regarding fine :-

Notwithstanding anything in section 29 of the Code of Criminal Procedure 1973, it shall be lawful for any magistrate of the first class specially empowered by the State Government in this behalf to pass a sentence of fine exceeding two thousand rupees on any person convicted to an offence which under this Act is punishable with fine exceeding two thousand rupees.

40. Recovery of amount due to State Government :-

Any amount due for the State Government from any person under this Act on a certificate issued by the Director or an archaeological officer authorized by him in this behalf be recorvered in the same manner as an arrear of land revenue.

41. Ancient monuments etc. no longer requiring protection :-

If the State Government are of opinion that it is no longer necessary to protect any ancient and historical monument or archaeological site and remains under the provisions of this Act it may, by notification in the Official Gazette, declare that the ancient and historical monument or archeological site and remains as the case may be has ceased to be protected monument or a protected area for the purpose of this Act.

42. Power to correct mistakes etc :-

Any clerical mistake, patent error or error arising from accidental slip or omission in description of any ancient monument or archaeological site and remains declared to be a protected monument or a protected area by or under this Act may, at any time, be corrected by the State Government by notification in the Official Gazette.

43. Protection of action taken under the Act :-

No suit for compensation and no criminal proceeding shall lie against any public servant in respect of any act done or in good faith intended to be done in the exercise of any power conferred by this Act.

44. Power to make rules :-

(1) The State Government may, by notification in the Official Gazette, make rules to carry out the purpose of this Act.

(2) In particular and without prejudice to the generality of the foregoing power such rules may provide for all or any of the following matters, namely :-

(a) The prohibition or regulation by licensing or otherwise of mining, quarrying , excavating, blasting or any operation of a like nature near a protected monument or the construction of building on land adjoining such monument and the removal of unauthorized building;

(b) The grant of licenses and permissions to make excavations for archaeological purposes in protected areas, the authorities, by whom and the restrictions and conditions subject to which , such licenses may be granted, the training of securities from licenses and the fees that may be charged for such licenses;

(c) The right of access of the public to a protected monument and the fee, if be charged thereof;

(d) The form and contents of the report of an archaeological officer or a licenses under clause (a) of sub -section (1) of section 22;

(e) The form in which application for permission under section 18 or section 24 may be made and the particulars which they should contain;

(f) The form and manner of preferring appeals under this Act and the time within which they may be preferred;

(g) The manner of service of any order or notice under this Act;

(h) The manner in which excavations and other like operations for archaeological purposes may be carried on;

(i) Any other matter which is to be or may be prescribed.

(3) Any Rule made under this section may provide that a breach thereof shall be punishable :-

(i) in the case of a rule made with reference to clause (a) of sub-section (2), with imprisonment which may extend to three months, or with fine which may extend to twenty five thousand rupees or with both;

(ii) in the case or rule made with reference to clause (b) of sub-section (2), with fine which may extend to twenty five thousand rupees

(iii) in the case of a rule made with reference to clause (c) of sub-section (2), with fine which may extend to twenty five thousand rupees.

(4) Every rule made under this section shall be laid as soon as may be after it is made, before House of the State legislature while it is in session for a total period of fourteen days which may be comprised in one session or in two successive sessions, and if before expiry of the session in which it is so laid or the session immediately following the House agree in making any modification in the rule or the House agree that the rule should not be made the rule shall thereafter have effect only in such modified form or be of no effect, as the case may be so, however, that any such modification or annulment shall be without prejudice to the validity of anything previously done under that rule.

45. Act not applicable to certain ancient monuments or archaeological site and remain or antiquities -

(a) To ancient monuments or archaeological sites and remains which have been or may hereafter be declared by or under the Ancient Monuments and Archaeological Sites and Remains Act 1958 (XXIV of 1958) or by or under any other law made by parliament to be national importance;
or

(b) To antiquities to which the provisions of the Ancient Monuments and Archaeological Site and Remains Act, 1958 (XXIV of 1958), apply for the time being ; or

(c) To ancient monuments or archaeological sites and remains or antiquities to which the provisions of the Ancient Monuments Preservation Act, 1904 (VII of 1904) apply for the time being.

Aims and Objective

Jharkhand is a rich state with age old culture, archaeological remains and arts & artifacts. The ancient art, age old megaliths, culturally important traditions, folks art & dances make it unique and important. The rich tribal culture is known all across the world, the ancient iron making technique is second to none. The dokra and Ledra art, the Sohrai & Kohbar paintings are the best practiced traditional art form that is prevelant all across the state.

It is the duty of the State Government to protect, preserve and conserve these art and artifacts as well as the precious archaeological sites of the state. It will not only attract the tourist to the state but will also help to uplift the economic condition of the respective area. In order to gain this objective it is proposed the "The Jharkhand Ancient Monument And Archaelogical Sites, remains and Art treasure Bill 2016 be put in place.

For the above mentioned objective necessary provisions has been incorporated in this Bill enactment of which is the aim of the Bill.

(Amar Kumar Bauri)

Member-In-Charge

fof/k foHkkx

>kj[k.M ikphu Lekjd vkj ijkrRo&LFky] vo'k"k rFkk dykfuf/k fo/k;d] 2016

fo"k; lph

[k.M&1		i"B
?kkjk,		
1-	lf{kIr uke] foLrkj vkj ikjHk	
2-	ifjHkk"kk,	
3-	ikphu Lekjdk vkfn dk ljf{kr Lekjd vkj {k= ?kkf"kr dju dh jkT; ljdkj dh 'kfDr	
4-	fdlh ljf{kr Lekjd d vf/kdkj dk vtu	
5-	djkj }kjk ljf{kr Lekjd dk ifjj{k.k	
6-	;fn fdlh ljf{kr Lekjd dk Lokeh v'kDr gk ;k og Lekjd xke&lifÙk gk] rk ml Lekjd d lc/k e /kkjk 5 d v/khu dh Lokeh dh 'kfDr;k dk i;kx dju d fy, l{ke 0;fDr	
7-	fdlh ljf{kr Lekjd dh ejEer d fy, /keLo dk mi;kx	
8-	/kkjk 5 d v/khu fd; x; djkj d mYy?kVu d ifr"k"k dk vkn'k nu dh 'kfDr	
9-	/kkjk 5 d v/khu fd; x; djkj d mYy?ku d ifr"k/k dk vkn'k nu dh 'kfDr	
10-	djkj dk ioÙku	
11-	dy uhykek d [kjhnnkj vkj Lokeh d tfj; nkok dju oky 0;fDr]	

	Lokeh }kjk fu"ikfnr y[ku l ck/; gkx	
12-	ljf{kr Lekjd dk vtu	
13-	dN ljf{kr Lekjdk dk vuj{k.k	
14-	LofPNd v'kkunku	
15-	n:i;kx l rFkk nf"kr ;k vifo= gku l itk&LFky dh j{kk	
16-	fdlh Lekjd d lc/k e jkT; ljdkj d vf/kdkjk dk ifjR;kx jkT; ljdkj dh etjh l	
17-	ljf{kr Lekjdk e io'k dk vf/kdkj	
18-	ljf{kr {k= e lifÙk&vf/kdkjk d mi;kx ij ifrc/k	
19-	ljf{kr {k= vftr dju dh 'kfDr	
20-	ljf{kr {k= e [knkb	
21-	ljf{kr {k= l fHkUu {k=k e [knkb	
22-	[knkb dk; d flyfly e fey ijko'k"k vkfn dk vfuok; vtu	
23-	ijkrkfRod i;ktuk d fy, [knkb vkfn	
24-	ijko'k"kk d LFkkukrj.k ij fu;=.k j[ku dh jkT; ljdkj dh 'kfDr	
25-	jkT; ljdkj }kjk ijko'k"kk dk vtu	
26-	gkfu ;k {kfr d fy, evkotk	
27-	eY; ;k evkot dk fu/kkj.k	
28-	'kfDr dk iR;k;ktu	
29-	ijko'k"k dh fcØh] vkfn dk otu	

30-	fdlh ijko'k"k dh tkp dju vkj mldk QkVkxkQ yu dk vf/kdkj	
31-	fdlh ijko'k"k dh tkp dju vkj mldk QkVkxkQ yu dk vf/kdkj	
32-	fdlh ijko'k"k d ckj e ?kk"k.kk	
33-	ijko'k"k d [kk tku dh fjikV	
34-	io'k] ryk'kh] tIrh bR;kfn dh 'kfDr	
35-	dkb oLr vkfn ijko'k"k vFkok dykfuf/k g vFkok ugh] bl fuf'pr dju dh 'kfDr	
36-	'kkfLr	
37-	vijk/kk d ifj{k.kk dk {k=kf/kdkj	
38-	dy vijk/k ll; gkx	
39-	teku d lc/k e fo'k"k mic/k	
40-	jkT; ljdkj d n; jd; dh olyh	
41-	ikphu Lekjd vkfn] ftudk lj{k.k ckn e vko';d u jg tk;A	
42-	Hky vkfn d l/kkj dh 'kfDr	
43-	bl vf/kfu;e d v/khu dh xb dkjokb dh j{kk	
44-	fu;e cuku dh 'kfDr	
45-	bl vf/kfu;e dk dfri; ikphu Lekjdk ;k ijkrRo LFkyk vkj vo'k"kk ;k ijko'k"kk ij ykx u gkuk	

>kj[k.M ikphu Lekjd vkj ijkrRo&LFky] vo'k"k rFkk dykfuf/k fo/k;d] 2016

lln }kjk cukb xb fof/k d }kjk ;k v/khu jk"Vh; egÙo d ?kkf"kr ikphu Lekj vkj ijkrRo&LFkyk rFkk vo'k"kk l fHkUu >kj[k.M&jkT; fLFkr ikphyu Lekjdk rFkk ijkrRo LFkyk vkj vo'k"kk d ifjj{k.k] ijkrRo [knkb d fofu;eu vkj ijko'k"kk d lj{k.k dk mic/k dju d fy, vf/kfu;eA

mís'kdk %& Hkkjr x.kjkT; d ljlBo o"k e >kj[k.M jkT; fo/kku eMy }kjk fuEufyf[kr :i l vf/kfu;fer gk %&

1- lf{kIr uke] foLrkj vkj ikjHk %&

1- ;g vf/kfu;e >kj[k.M ikphu Lekjd vkj ijkrRo&LFky] vo'k"k rFkk dykfuf/k vf/kfu;e 2016 dgyk;xkA

2- bldk foLrkj lEi.k >kj[k.M jkT; e gkxkA

3- ;g ml rkjh[k l ior gkxk tk jkT; ljdkj xtV e vf/klpuk }kjk fu;r djA

2- ifjHkk"kk, %& tc rd dkb ckr fo"k; ;k ilx d fo:) u gk] bl vf/kfu;e e %&

¼d½ ikphu Lekjd l rkRi; g ,lh dkb ljpuk] fuek.k ;k Lekjd vFkok dkb Lri ;k 'ko xkMu ;k tyku dh txg] ;k dkb xQk] iLrj&ifrek] f'kyk&y[k ;k ,dk'e] ftldk ,frgkfld] ijkrRoh; ;k dykRed egÙo gk vkj tk de l de lk o"kk l fo|eku gk] vkj bld vUrxr fuEu Hkh g %&

¼i½ mldk vo'k"k]

¼ii½ mldk LFky]

¼iii½ ,l LFky l lVh Hkfe dk ,lk Hkkx] tk ml LFky d ifj{k.k] lj{k.k l/kkj.k vkj vuj{k.k d fy, vko';d ;k vif{kr gk] vkj

¼iv½ ogk rd igpu mld lfo/kki.k fujh{k.k vkj ejEer d lk/kuA

¼[k½ ijko'k"k d vUrxr fuEu g %&

¼i½ dkb enk] efr] fp=dkjh] ijky[k ;k vU; dykdfr vFkok f'kYiA

¼ii½ fdlh Hkou ;k xQk l vyx dh dkb oLr] inkFk ;k pht]

¼iii½ vrhr;xhu foKku] dyk] f'kYi] lkfgR;] /ke] ufrdrk ;k jktuhfr fun'kd dkb oLr] inkFk ;k pht

¼iv½ ,frgkfld egRo dh dkb oLr] inkFk ;k pht] vkj

¼v½ dkb ,lh oLr] inkFk ;k pht ftl jkT; ljdkj bfrgkl ;k ijkrRo l lc/k gku d dkj.k] ljdkjh xtV e vf/klpuk }kjk bl vf/kfu;e d i;ktukFk ijko'k"k ?kkf"kr dj tk de l de lk o"kk l fo|eku gk] vkj

¼vi½ dkb ik.Mfyfi] vfHky[k vFkok vU; iy[k ftldk oKkfud] ,frgkfld] lkfgfR;d vFkok lkn;ck/kh egRo gk rFkk tk de l de ipgÙkj o"kk l fo|eku gkA

¼x½ ^dykfuf/k* l rkEi; g dkb ekuoh; dykdfr tk ijko'k"k u gk] vkj ftl jkT; ljdkj ,frgkfld ,o lkn;ck/kh egÙo jgu d dkj.k ljdkj xtV e vf/klpuk }kjk bl vf/kfu;e d i;ktukFk dykfuf/k ?kkf"kr dj] c'kr ,lh dykdfr d lc/k e mld ltd dykdkj d thoudky e ,lh dkb ?kk"k.kk ugh dh tk;xhA

¼?k½ ^^ijkrRo inkf/kdkjh** l rkRi; g jkT; ljdkj d ijkrRo vkj lxgky; foHkkx dk dkb inkf/kdkjh] tk jkT; ljdkj }kjk le;≤ ij ;Fkkfofgr ifDr l uhp dk u gkA

¼M-½ ^^ijkrRo LFky vkj vo'k"k** l rkRi; g ,lk dkb {k= ftle ,frgkfld ;k ijkrroh; egÙo d [kMgj ;k ikxo'k"k gk ;k ftle mud gku dk fo'okl ;fDr;Dr :i l fd;k tkrk gk] vkj tk de l de ,d lk o"kk l fo|eku gk vkj bld vUrxr fuEu Hkh g %&

(i) ml {k= l lVh Hkfe dk ,lk Hkkx tk ?kju ;k <du ;k vU;Fkk ifjjf{kr dju d fy, vif{kr gk] vkj

¼ii½ ml {k= rd igpu vkj mld lfo/kki.k fujh{k.k d lk/kuA

¼p½ ^fun'kd* l rkRi; g jkT; ljdkj dk ijkrRo vkj lxgky; fun'kd rFkk bld vUrxr fun'kd dk dÙk0; lkfnr dju d fy, jkT; ljdkj }kjk ikf/kdr dkb vU; inkf/kdkjh Hkh gA

¼N½ 0;kdj.k lc/kh ifjoÙkuk vkj ltkrh; ink lfgr ^vujf{kr djuk* d vrxr fdlh ljf{kr Lekjd dk ?kjuk] <duk] ejEer djuk] mldk iu:)kj vkj ektu] LFky d vu:i lefpr okrkoj.k fuek.k rFkk ,lk dkb vU; dk; djuk Hkh g tk fdlh ljf{kr Lekjd d ifjj{k.k ;k ogk rd igpu dh lfo/kk ikIr dju d fy, vko';d gkA

¼t½ ^Lokeh* d vUrxr g %&

¼i½ ,lk l;Dr Lokeh ftl viuh vkj l vkj vU; l;Dr Lokfe;k dh vkj l ic/k dju dh 'kfDr nh xb gk vkj ,l fdlh Lokeh dk gd mÙkjkf/kdkjh] vkj

¼ii½ ic/k dh 'kfDr dk i;kx dju okyk dkb ic/kd ;k U;klh vkj ,l ic/kd ;k U;klh dk inh; mÙkjkf/kdkjh]

¼>½ ^fofgr* l rkRi; g bl vf/kfu;e d v/khu cu fu;ek }kjk fofgrA

¼´½ ^ljf{kr {k=* l rkRi; g dkb ,lk ijkrRo LFky vkj vo'k"k tk bl vf/kfu;e d }kjk ;k v/khu ljf{kr {k= ?kkf"kr fd;k tk;A

¼V½ ^ljf{kr Lekjd* l rkRi; g ,lk ikpuh Lekj tk bl vf/kfu;e d }kjk ;k v/khu ljf{kr Lekjd ?kkf"kr fd;k tk;] vkj

¼B½ ^jkT; ljdkj* l rkRi; g >kj[k.M dh jkT; ljdkj

ikphu Lekjdk vkj ijkrRo & LFkyk rFkk vo'k"kk dk lj{k.k %&

3- ikphu Lekjdk vkfn dk ljf{kr Lekjd vkj {k= ?kkf"kr dju dh jkT; ljdkj dh 'kfDr %&

¼1½ tc jkT; ljdkj dh jk; gk fd fdlh ikphu Lekjd ;k ijkrRo LFky vkj vo'k"k dk bl vf/kfu;e d v/khu lfj{kr dju dh t:jr g] rk og ljdkjh txV e vf/klpuk }kjk ml ikphu Lekjd ;k ijkrRo LFky vkj vo'k"k dk ;FkkfLFkfr ljf{kr Lekjd ;k ljf{kr {k= ?kkf"kr dju d viu vfHkik; dk nk eghuk dh ukfVl nxh vkj ,lh gj vf/klpuk dh ,d ifr] ;FkkfLFkfr ml Lekjd ;k ml ijkrRo LFky vkj vo'k"k d fudV fdlh /;kud"kh LFkku e fpidk nh tk,xh

¼2½ ,l fdlh ikphu Lekjd ;k ijkrRo&LFky vkj vo'k"k l fgrc) dkb Hkh 0;fDr vf/klpuk tkjh fd, tku d nk eghuk d Hkhrj] ml Lekjd ;k ijkrRo LFky vkj vo'k"k d ljf{kr Lekjd ;k ljf{kr {k= ?kkf"kr fd, tku ij vkifÙk dj ldxkA

¼3½ mDr nk eghuk dh vof/k lekIr gku ij] jkT; ljdkj] ;fn dkb vkifÙk ikIr gb gk rk ml ij fopkj dju d ckn] ljdkjh xtV e vf/klpuk }kjk] ;FkkfLFkfr ml ikphu Lekjd ;k ijkrRo&LFky vkj vo'k"k dk ljf{kr Lekjd ;k ljf{kr {k= ?kkf"kr dj ldxhA

¼4½ mi /kkjk ¼3½ d v/khu idkf'kr vf/klpuk] tc rd ml okil u y yh tk;] bl ckr dk fu'pk;d iek.k gkxh fd mlI lcf/kr ikphu Lekjd ;k ijkRo LFky vkj vo'k"k bl vf/kfu;e d i;ktukFk ljf{kr Lekjd ;k ljf{kr {k= gA

ljf{kr Lekjd

4- fdlh ljf{kr Lekjd d vf/kdkj dk vtu %&

¼1½ fun'kd] jkT; ljdkj dh etjh l] fdlh ljf{kr Lekjd dk [kjn dj ;k iVV ij y ldxk vFkok ml nku ;k ifjp; d :i e Lohdkj dj ldxkA

¼2½ tc fdlh ljf{kr Lekjd dk dkb Lokeh u gk] rk fun'k ljdkjh xtV e vf/klpuk }kjk ml Lekjd dk vfHkHkkodRo xg.k dj ldxkA

¼3½ fdlh ljf{kr Lekjd dk Lokeh] fyf[kr fy[kr d tfj;] fun'kd dk Lekjd dk vfHkHkkod cuk ldxk vkj fun'kd jkT; ljdkj dh etjh l ,lk vfHkHkkodRo Lohdkj dj ldxkA

¼4½ tc fun'kd mi /kkjk ¼3½ d v/khu Lekjd dk vfHkHkkodRo Lohdkj dj yxk rc Lokeh dk bl vf/kfu;e e Li"Vrh micf/kr fLFkfr dk NkMdj Lekjd e ogh lEink LoRo vf/kdkj] gd vkj fgr gkxk] ekuk fun'kd mldk vfHkHkkod ugh cuk;k x;k gk] vkj /kkjk 5 d v/khu fu"ikfnr fyf[kr fy[kr dj ykx gkxkA

¼5½ bl /kkjk dh fdlh ckr l ijijkxr /kkfed vu"Bkuk d fy, fdlh ljf{kr Lekjd d mi;kx ij dkb ifrdy iHkko ugh iMxkA

5- djkj }kjk ljf{kr Lekjd dk ifjj{k.k %&

¼1½ jkT; ljdkj }kjk ,lk fun'k feyu ij fun'kd fdlh ljf{kr Lekjd d Lokeh l iLrko djxk fd og Lekjd d vuj{k.k d fy, fdlh mfYyf[kr vof/k d Hkhrj jkT; ljdkj d lkFk djkj djA

¼2½ bl /kkjk d v/khu djkj e fuEu fdlh ;k lHkh fo"k;k d fy, mic/k fd;k tk ldxh%&

d½ Lekjd dk vuj{k.k

[k½ Lekjd dh vfHkj{kk vkj mldh n[k&j[k d fy; fu"ikfnr fdlh 0;fDr d dÙk0;

x½ Lokeh d fuEu vf/kdkjk ij ifrc/k %&

¼i½ fdlh i;ktu l Lekjd dk mi;kx

¼ii½ Lekjd e io'k ;k mlk fujh{k.k dju d fy; dkb 'kYd yuk]

¼iii½ Lekjd dk u"V djuk] gVkuk] mle ifjoÙku djuk ;k ml fo:fir djuk] vFkok]

¼iv½ Lekjd LFky ij ;k mld lehi fuek.k dk; djukA

¼?k½ tulk/kkj.k ;k mld fdlh ox dk ;k ijkrRo&inkf/kdkfj;k dk vFkok Lokeh ;k fdlh ijkrRo inkf/kdkjh }kjk ifrfu;Dr 0;fDr;k dk ;k jkT; ljdkj }kjk Lekjd d fujh{k.k ;k vuj{k.k d fy, ikf/kdr fdlh vU; inkf/kdkjh ;k ikf/kdkjh dk Lekjd rd igpku dh lfo/kk; nukA

¼M-½ ;fn Lokeh og Hkfe] ft l ij Lekjd vofLFkr gk] ;k mll lVh dkb Hkfe cpuk pkg rk ml n'kk e jkT; ljdkjdk ukfVl nuk vkj ml Hkfe ;k mld fdlh [kkl Hkkx dk cktkj eY; ij [kjhnu d vf/kdkj dk ljdkj d fy, ikjf{kr djukA

¼p½ Lekjd d vuj{k.k d flyfly e Lokeh ;k ljdkj }kjk fd; x; fdlh [kpdk Hkxrku

¼N½ ;fn jkT; ljdkj u Lekjd d vuj{kkd flyfly e dkb [kp fd;k gk rk Lekjd d LoRo lc/kh ;k vU; vf/kdkj dk jkT; ljdkj e fufgr gkxkA

¼t½ djkj l mRiUu fdlh fookn dk fu.k; dju d fy, fdlh ikf/kdkjh dh fu;fDr] vkj

¼>½ Lekjd d vuj{k.k l lc) ,lk dkb fo"k; tk Lokeh vkj jkT; ljdkj d chp djkj dk mfpr fo"k; gkA

¼3½ jkT; ljdkj ;k Lokeh bl /kkjk d v/khu g, djkj d fu"iknu dh rkjh[k l rhu o"k chr tku d ckn] fdlh Hkh le; vU; i{k dk N% eghuk dh fyf[kr ukfVl ndj djkj lekIr dj ldxkA

ijUr ;fn djkj Lokeh }kjk lekIr fd;k tk; rk og djkj dk lekfIr d Bhd iooÙkh ikp o"kk e ;k ;fndjkj bll de vof/k rd ioÙk jgk g rk djkj ioÙk jg dh vof/k e Lekjd d vuj{k.k ij jkT; ljdkj }kjk fd,x, fdlh [kp dk Hkxrku jkT; ljdkj dk djxkA

¼4½ bl /kkjk d v/khu gvk dkb djkj ml 0;fDr dk Hkh c/kudkjh gkxk rk bl djkj l lc) Lekjd dk Lokeh gku dk nkok ,l i{k l] bld tfj; ;k v/khu dj ftl ¼i{k½ d }kjk ;k ftlh vkj l djkj fu"ikfnr fd;k x;k gkA

6. ;fn fdlh ljf{kr Lekjd dk Lokeh v'kdr gk ;k og Lekjd xke&lifÙk gk] rk ml Lekjd d lc/k e /kkjk 5 d v/khu dh Lokeh dh 'kfDr;k dk i;kx dju d fy, l{ke 0;fDr %&

¼1½ ;fn fdlh ljf{kr Lekjd dk Lokeh ukckfyx gku ;k fdlh le; v'kdrrk d dkj.k Lo; dk; dju e vleFk gk rk mldh vkj l dke dju d fy, fof/kr] l{ke 0;fDr /kkjk 5 }kjk Lokeh dk inÙk 'kfDr;k dk i;kx dj ldxkA

¼2½ fdlh ,l ljf{kr Lekjd dh n'kk e tk xke lifÙk gk] ef[k;k ;k ,lh lifÙk d ic/k dk 'kfDr;k dk i;kx dju okyk dkb vU; xke inkf/kdkjh /kkjk 5 }kjk Lokeh dh inÙk 'kfDr;k dk i;kx dj ldxkA

¼3½ bl /kkjk dh fdlh ckr l ,lk dkb 0;fDr tk ml 0;fDr l fHkUu /ke dk gk ftldh vkj l og dke dj jgk gk] fdlh ,lh ljf{kr Lekjd d lc/k e dkb djkj dju fu"ikfnr dju d fy, 'kfDr inÙk ugh le>k tk;xk] tk ¼Lekjd½ ;k ftldk dkb Hkkx fu;rdkfy :i l ml link; dh /kkfed itk ;k vu"Bku d fy, mi;kx e yk;k tkrk gkA

7. fdlh ljf{kr Lekjd dh ejEer d fy, /keLo dk mi;kx %&

¼1½ ;fn dkb Lokeh ;k vU; 0;fDr tk fdlh ljf{kr Lekdj d vuj{k.k d fy, /kkjk 5 d v/khu djkj dju e l{ke gk] ,lk dkj djuk vLohkj dj ;k u dj] vkj ;fn ,l Lekjd dk vPNh gkyr e j[ku d fy, ;k vU; i;ktuk d lkFk&lkFk bld i;ktukFk Hkh dkb /keLo lftr gk rk jkT; ljdkj ,l /keLo ;k mld fdlhHkkx d lefpr mi;kx d fy, ftyk U;k;k/kh'k d U;k;ky; e okn pyk ldxh ;k ;fn Lekjd dh ejEer dk ikDdfyr [kp ipkl gtkj :i; l vf/kd ugh gk] rk ftyk U;k;k/kh'k d ikl vkonu dj ldxhA

¼2½ mij/kkjk&1 d v/khu fdlh vkonu dh luokb djr le; ftyk U;k;k/kh'k Lokeh dh vkj fdlh ,l 0;fDr dk lEeu dj ldxk vkj mldh ijh{kk dj ldxk] ftldk lk{; yuk ml vko';d tku iM rFkk /keLo ;k mld fdlh Hkkx d lefpr mi;kx d fy, vkn'k n ldxk vkj,l fdlh vkn'k dk mlh idkj fu"ikfnr fd;k tk ldxk] ekuk og fdlh nhokuh U;k;ky; dh fMØh gkA

8. djkj u djuk ;k dju l vLohdkj djuk %&

¼1½ ;fn dkb Lokeh ;k vU; 0;fDr tk fdlh ljf{kr Lekjd d vuj{k.k d fy, /kkjk 5 d v/khu djkj dju d fy, l{ke gk] ,lk djkj djuk vLohdkj dj ;k u dj rk jkT; ljdkj /kkjk 5 dh mi/kkjk ¼2½ e mfYyf[kr fdlh ;k lHkh ckrk dk mic/k dju d fy,

vkn'k n ldxh rFkk ,lk vkn'k Lokeh ;k ml vU; 0;fDr vkj ,l gj 0;fDr d fy, c/kudkjh gkxh] tk ml Lokeh ;k ml vU; 0;fDr l mld tfj; ;k v/khu ml Lekjd ij gd dk nkok djrk gkA

½2½ mi/kkjk ¼1½ d v/khu fn, x; fdlh vkn'k e og mic/k gk fd Lekjd dk vuj{k.k Lokeh ;k djkj dju e l{ke dkb vU; 0;fDr djxk] rk Lekjd d vuj{k.k d lkj lefpr [kp Hkxrku jkT; ljdkj djxhA

¼3½ mi/kkjk ¼1½ d v/khu dkb vkn'k rc rd u fn;k tk;xk tc rd fd Lokeh ;k vU; 0;fDr dk iLrkfor vkn'k d fo:) fyf[kr vfHkonu dju dk volj u n fn;k x;k gkA

9. /kkjk 5 d v/khu fd; x; djkj d mYy?ku d ifr"k/k dk vkn'k nu dh 'kfDr %&

¼1½ ;fn fun'kd dk vk'kdk gk fd fdlh ljf{kr Lekjd dk Lokeh ;k n[kydkj /kkjk 5 d v/khu fu"ikfnr djkj d c/ktk dk mYy?ku djr g, Lekjd dk u"V djuk] gVkuk] ifjofrr djuk] fo:fir djuk] [krjk igpkuk ;k mldk n:i;kx djuk pkgrk g] mld fudV Hkou cukuk pkgrk g rk fun'kd Lokeh ;k n[kydkj dk fyf[kr vfHkonu dju dk volj nu d ckn] djkj d ,l mYy?kVu d ifr"k/k dk vkn'k n ldxkA

ijUr fdlh ,l ekey e ,lk volj nu dh t:jr ugh g tgk vfHkfyf[kr fd; tku oky dkj.kk l] fun'kd dk lek/kku gk tk; fd ,lk djuk fgrdj ;k 0;ogkfjd ugh gA

½2½ bl /kkjk d v/khu fn, g, vkn'k l 0;fFkr dkb 0;fDr ;Fkkfofgr le; d Hkhrj vkj jhfr l jkT; ljdkj d ikl vihy dj ldxk vkj bl ij jkT; ljdkj dk fu.k; vfUre gkxkA

10. djkj dk ioÙku %&

¼1½ ;fn dkb Lokeh ;k vU; 0;fDr tk /kkjk 5 d v/khu fu"ikfnr jkj }kjk fdlh Lekjd dk vujf{kr dju d fy, ck/; g] fun'kd }kjk ;Fkkfu;r le; d Hkhrj dkb ,lk dk; djuk vLohdkj d fy; vko';d gk] rk fun'kd fdlh 0;fDr dk ,lk dk; dju d fy, ikf/kdr dj ldxk] vkj og Lokeh ;k vU; 0;fDr ,lk dk; dju dk [kp ;k [kp dk mruk v'k nu dk Hkkxh gkxk ftruk og Lokeh djkj d v/khu Hkxrku djku dk Hkkxh gkA

½2½ ;fn mi/kkjk ¼1½ d v/khu Lokeh ;k vU; 0;fDr }kjk Hkxr; [kp dh jde d ckj e dkb fookn mB rk og jkT; ljdkj d ikl Hkt fn;k tk;xk vkj mldk fu.k; vfUre gkxkA

11. dN uhykek d [kjhnnkj vkj Lokeh d tfj; nkok dju okyh 0;fDr] Lokeh }kjk fu"ikfnr fyf[kr l ck/; gkx %&

,lk gj 0;fDr tk Hk&jktLo d cdk; ;k fdlh vU; ykd&ekx d fy; g, uhyke e ,lh Hkfe [kjhn ftl ij dkb ,lk Lekjd vofLFkr gk ftld lc/k e rRdkyhu Lokeh u /kkjk 5 d v/khu ¼ml le;½ dkb fyf[kr fu"ikfnr fd;k gk vkj ,lk gj 0;fDr tk ,lk fyf[kr fu"ikfnr dju oky fdlh Lokeh l mld tfj; ;k mld v/khu flh Lekjd ij gd dk nok dj] ml fyf[kr l ck/; gkxkA

12. ljf{kr Lekjd dk vtu %&

;fn jkT; ljdkj dk ;g vk'kdk gk fd fdlh ljf{kr Lekjd d u"V] {kfrxLr] n:i;kftr gku ;k 'kh.k gku dk NkM fn, tku dk [krjk g rk og yM ,fDoth'ku ,DV] 1894 ¼1] 1894½ d mic/kk d v/khu ml ljf{kr Lekjd dk vftr dj ldxh] ekuk ljf{kr Lekjd dk vuj{k.k mdr vf/kfu;e d vFkkUrxr ykd&i;ktu gkA

13. dN ljf{kr Lekjdk dk vuj{k.k %&

¼1½ jkT; ljdkj ,l gj Lekjd dk vuj{k.k djxh tk /kkjk 12 d v/khu vftr fd;k x;k gk ;k ftld lc/k e /kkjk 4 e mfYyf[kr dkb vf/kdkj vftr fd;k x;k gkA

½2½ /kkjk 4 d v/khu fdlh Lekjd dk vfHkHkkodRo xg.k dj yu ij fun'kd ml Lekjd dk fujh{k.k dju d fy, lHkh mfpr le;k ij Lo; ;k viu ,tV] v/khuLFk vkj dkexkjk d tfj, ml Lekjd dk fujh{k.k dju vkj ,lh lkefx;k yku rFkk ,l dk; dju d fy, tk og ¼fun'kd½ Lekjd d vuj{k.kkFk vko';d ;k okNuh; le>] ml Lekjd ij tku dk vf/kdkj gkxkA

14. LofPNd v'kkunku %&

fun'k fdlh ljf{kr Lekjd d vuj{k.k lc/kh [kp d fy, LofPNd v'kkunku ikIr dj ldxk vkj bl idkj ikIr v'kkunkuk d ic/k vkj mi;kx d fy, ;Fkko';d lkekU; ;k fo'k"k fun'k n ldxk %

ijUr bl /kkjk d v/khu ikIr dkb v'kkunku] ftl i;ktu d fy, og fn;k x;k gk] mll fHkUu i;ktu e ugh yxk;k tk;xkA

15. n:i;kx l rFkk nf"kr ;k vifo= gku l itk&LFky dh j{kk %&

¼1½ bl vf/kfu;e d v/khu jkT; ljdkj }kjk vujf{kr ,l ljf{kr Lekjd dk] tk itk dk LFkku ;k rhFk LFkku gk] mi;kx mldh ifr"Bkk d ifrdy fdlh i;ktu e u fd;k tk;xkA

½2½ tc jkT; ljdkj u /kkjk 12 d v/khu dkb ljf{kr Lekjd vftr fd;k gk ;k tc fun'kd u fdlh ljf{kr Lekjd dh /kkjk 4 d v/khu [kjhnk ;k iVV ij fy;kgk ;k ml nku ;k olh;r d :i e Lohdkj fd;k gk ;k mldk vfHkHkkodRo xg.k fd;k gk vkj tc ,lk Lekjd ;k mldk dkb Hkkx fdl lEink; }kjk /kkfed itk ;k vu"Bkuk d fy, mi;kx e yk;k tkrk gk] rk fun'k ,l Lekjd ;k mld Hkkx dk nf"kr ;k vifo= gku l cpku d fy;%&

¼d½ ,lk ifr"k/k djd fd ,lk dkb 0;fDr] tk mDr Lekjd ;k mld flh Hkkx dk mi;kx e yku oky lEink; dh /kkfed iFkkvk d vulkj ogk tku dk gdnkj ugh g] mDr Lekjd ;k mld fdlh Hkkx d /kkfed Hkkjlk/kd 0;fDr;k dh] ;fngk] lEefr l fofgr 'kÙkk d vulkj gh mle io'k dj ldxk vU;Fkk ugh] ;k

¼[k½ ,lh vU; dkjokb djd tk fun'kd bl fufeÙkj vko';d le>] mfpr 0;oLFkk djxkA

16. fdlh Lekjd d lc/k e jkT; ljdkj d vf/kdkjk dk ifjR;kx jkT; ljdkj dh etjh l] fun'kd %&

¼d½ tc fun'kd u bl vf/kfu;e d v/khu fdlh Lekjd d lc/k e fdlh fcØh] iVV] nku ;k olh;r d tfj; vftr fd;k x;k dkb vf/kdkj ljdkjh xtV e vf/klpuk fudky dj bl idkj vftr vf/kdkjk dk ifjR;kx ml 0;fdr d fgr e djxk tk ml le; ml Lekjd dk Lokeh gkrk ifjR;Dr dj ldk ;fn ,lk vf/kdkj vftr ugh fd;k x;k gkrk] ;k

¼[k½ bl vf/kfu;e d v/khu xg.k fd; x; fdlh Lekjd d vfHkkHkkodRo dk ifjR;kx dj ldxkA

17. ljf{kr Lekjdk e io'k dk vf/kdkj %&

bl vf/kfu;e d mic/kk vkj bld vrxr cu fu;ek d v/khu jgr g, lolk/kkj.k dk fdlh ljf{kr Lekjd e io'k dk vf/kdkj gkxkA

ljf{kr {k=

18. ljf{kr {k= e lifÙk&vf/kdkjk d miHkkx ij ifrc/k %&

¼1½ fdlh ljf{kr {k= d Lokeh ;k n[kydkj lfgr dkb 0;fDr] jkT; ljdkj dh vuefr d fcuk u rk fdlh ljf{kr {k= d Hkhrj dkb Hkou ;k vU; fuek.k dk; djxk] u ml {k= e [kuu] mR[kuu] [knkb] foLQkV ;k bl idkj dk dkb vU; dk; djxk] vkj u ml {k= ;k mld fdlh Hkkx dk vU; mi;kx djxkA

ijUr bl mi/kkjk d mic/k l fdlh ,l {k= ;k mld fdlh Hkkx dk df"k d fy, mi;kx ifrf"k) u le>k tk;xk] ;fn df"k d fy, lrg l ,d QV l vf/kd xgjh feVVh [kknuk u iMA

¼2½ jkT; ljdkj] vkn'k }kjk] ;g fun'k n ldxh fd mi/kkjk¼1½ d micU/kk d fo:) fdlh ljf{kr {k= d Hkhrj fdlh 0;fDr }kjk fufer Hkou ;k vU; fuek.k mfYyf[kr vof/k d Hkhrj gVk fn;k tk; vkj ;fn og 0;fDr ml vkn'k dk vuikyu djuk vLohdkj dj ;k mldk ikyu u dj rk fun'kd ml Hkou dk gVok ldxk vkj Hkou gVoku dk [kp ml 0;fdr }kjk n; gkxkA

19. ljf{kr {k= vftr dju dh 'kfDr %&

;fn jkT; ljdkj fdlh Lekjd@ljf{kr LFky@{k= dk lj{k.k vko';d le> rk Hk&vtu vf/kfu;e ¼yM ,fDoth'ku ,DV½] 1894] ¼1] 1894½ d mic/kk d v/khu ml {k= dk ykd i;ktu d fgr e vftr dj ldxhA

ijkrkfRod [knkb

20. ljf{kr {k=k e [knkb %&

dkb ijkrRo inkf/kdkjh ;k mld }kjk bld fy, ikf/kdr dkb inkf/kdkjh ;k bl vf/kfu;e d v/khu bld fy, fn;k x;k ykbll /kkj.k dju okyk dkb 0;fDr ¼vkx ykbll/kkjh d :i e fufn"V½ fun'kd vkj Lokeh dh fyf[kr lpuk nu d ckn] fdlh ljf{kr {k= e io'k vkj mldh [knkb dj ldxk vxj ikphu Lekjd ,o ijkrRo&LFky vkj vo'k"k vf/kfu;e] 1958 ¼24] 1958½ dh /kkjk 24 d mic/kk d ifrdy u gkA

21- ljf{kr {k=k l fHkUu {k=k e [knkb %&

ikphu Lekj ,o ijkrRo&LFky vkj vo'k"k vf/kfu;e] 1958] ¼24] 1958½ dh /kkjk 24 d mic/kk d v/khu jgr g, ;fn fdlh ijkrRo inkf/kdkjh d ikl ,lk fo'okl dju dk dkj.k gk fd ljf{kr {k= l fHkUu fdlh {k= e ,frgkfld ;k ijkrkfRod egRo d [kMgj ;k ijko'k'k g rk og ;k mld }kjk bld fy, ikf/kdr dkb inkf/kdkjh] fun'kd vkj Lokeh dk fyf[kr lpuk nu d ckn] ml {k= e io'k vkj mldh [knkb dj ldxkA vxj ikphu Lekjd ,o ijkrRo&LFky vkj vo'k"k vf/kfu;e] 1958 ¼24] 1958½ dh /kkjk 24 d mic/kk d ifrdy u gkA

22- [knkb&dk; d flyfly e fey ijko'k"k vkfn dk vfuok; vtu %&

¼1½ tc /kkjk 20 ;k /kkjk 21 d v/khu fdlh {k= e dh xb [knkb e dkb ijko'k"k fey rk] ;FkkfLFkfr] ijkrRo inkf/kdkjh ;k ykbll/kkjhA

¼d½ ;Fkk'kh?k mu ijko'k"kk dh tkp djxk vkj jkT; ljdkj dk ;Fkkfofgr jhfr l vkj ;Fkkfofgr fooj.k d lkFk ,d ifronu nxkA

¼[k½ [knkb&dk; lekIr gku ij bu ijko'k"kk d idkj d lc/k e ml Hkfe d Lokeh dk fyf[kr lpuk nxk ftl Hkfe l ; ijko'k"k ikIr g, gkA

½2½ tc rd mi/kkjk ¼3½ d v/khu ,l ijko'k"kk dk vfuok; vtu dk vkn'k ugh fn;k tk; rc rd] ;FkkfLFkfr ijkrÙo&inkf/kkjh ;k ykbll/kkjh mUg ,lh ljf{kr vfHkj{kk e j[kxk tk Bhd le>A

¼3½ mi/kkjk ¼1½ d v/khu ifronu feyu ij jkt; ljdkj ,l fdUgh ijko'k"kk dk vfuok; vtu dk vkn'k n ldxhA

¼4½ tc mi/kkjk ¼3½ d v/khu fdlh ijko'k"k d vfuok; vtu dk vkn'k fn;k tk, rc og ijko'k"k vkn'k dh rkjh[k l jkt; ljdkj e fufgr gk tk;xkA

23- ijkrkfRod i;ktuk d fy, [knkb vkfn %&

/kkjk 21 e ;Fkk micf/kr fLFkfr dk NkMdj dkb ijkrÙo& inkf/kdkjh ;k vU; inkf/kdkjh] jkT; ljdkj d io vueknu fcuk vkj jkT; ljdkj }kjk ,rnFk cuk; x; fu;ek ;k fn, x, fun'kk dk vulj.k fd, fcuk] ,l {k= e] tk ljf{kr {k= u gk] ijkrkfRod i;ktuk d fy, dkb [knkb ;k bl rjg dk dkb vU; dk; u rk djxk] u fdlh 0;fDr dk ,lk dju d fy, ikf/kdr gh djxkA

ijko'k"kk dk lj{k.k

24- ijko'k"kk d LFkkukUrj.k ij fu;=.k j[ku dh jkT; ljdkj dh 'kfDr %

1- ¼1½ ;fn jkT; ljdkj le> fd dkb ijko'k"k ;k ijko'k"k&ox mldh etjh d fcuk fdlh LFkku l ugh gVk;k tkuk pkfg,] tgk og j[kk x;k g] rk jkT; ljdkj ljdkjh xtV e vf/klpuk }kjk ;g fun'k n lxh fd ,lk dkb ijko'k"k ;k ijko'k"k&ox fun'k dk fyf[kr vuefr d fcuk ugh gVk;k tk ldxkA

¼2½ mi/kkjk ¼1½ d v/khu vuefr d fy, gjd vkonu&i= ;Fkkfofgr ii= e gkxk vkj mle ;Fkkfofgr foj.k fn; tk;xA

¼3½ vuefr dh vLohdfr d vkn'k d fo:) jkT; ljdkj d ikl vihy dh tk ldxh ftldk fu.k; vfre gkxkA

2- jkT; d vUrxr fdlh Hkh 0;fDr }kjk jf{kr ijko'k"k ¼efÙk] fp=dkjh] vfHky[k] ikphu Hkou vkfn dk dykRed [kfMr v'k] ik.Mfyfi] f'kYi vkfn½ dk fuc/ku] ijrÙo foHkkx e djkuk vfuok; gkxk ftld fy, ,d ijkrkfRod inkf/kdkjh eukuhr gkxkA bl vf/kfu;e e fuf/kfjr iko/kku d foijhr dk; dju okyk 0;fDr 25]000 :i; rd nM vFkok rhu ekg rd d dkjkokl vFkok nkuk l n.Muh; gkxkA

25- jkT; ljdkj }kjk ijko'k"kk dk vtu %

¼1½ ;fn jkT; ljdkj dk ;g vk'kdk gk fd /kkjk 24 dh mi/kkjk ¼1½ d v/khu tkjh dh xb vf/klpuk e mfYyf[kr fdlh ijko'k"k d u"V] LFkkukUrfjr] {kfrxLr n:i;kftr gku ;k 'kh.k gku dk Hk; g vFkok jkT; ljdkj dh ;g jk; g fd mDr ijko'k"k dk mld ,frgkfld ;k ijkrRoh; egRo d dkj.k fdlh lkotfud LFkku e ljf{kr j[kuk okNuh; g] rk jkT; ljdkj mDr ijko'k"k d Lokeh dk mld vtu d lc/k e ukfVl nxkA

¼2½ tc fdlh ijko'k"kk d lc/k e mi/kkjk ¼1½ d v/khu vfuok; vtu dh ukfVl nh tk,] rc ,lk ijko'k"k ukfVl dh rkjh[k l gh jkT; ljdkj e fufgr gk tk,xkA

¼3½ bl /kkjk }kjk inÙk vfuok; vtu 'kfDr ;FkkFk /kkfed vu"Bkuk e oLrr% /oLr fdlh ifrek ;k irhd ij ykx u gkxhA

eY;kdu ,o evkot d fl)kUr

26- gkfu ;k {kfr d fy, evkotk %&

;fn Hkfe d fl Lokeh ;k n[kydkj dk viuh fdlh Hkfe e io'k ;k [knkb fd; tku d dkj.k vFkok bl vf/kfu;e }kjk inÙk fdlh vU; 'kfDr d i;kx d pyr dkb gkfu] {kfr ;k ml Hkfe l gku oky eukQ e deh gb gk rk jkT; ljdkj ml ,lh gkfu] {kfr ;k eukQ dh deh d fy; evkotk nxhA

27- eY; ;k evkot dk fu/kkj.k %&

¼1½ tc fdlh ,lh Hkfe d eY; ;k evkot d lc/k e] ftl jkT; ljdkj bl vf/kfu;e d v/khu mDr eY; ij vftr dju d fy, 'kfDr&liUu g] ;k bl vf/kfu;e d v/khu fd, x, fdlh dk; d fy; jkT; ljdkj }kjk fn; tku oky evkot d lc/k e fookn mB] rk og eY; ;k evkot dh jde] yM ,fDoth'ku ,DV] 1894 ¼1] 1894½ dh /kkjk 3] 5] 8 l 34] 45] 46] 51 vkj 52 e micf/kr jhfr l] tgk rd ; /kkjk, ykx gkrh gk] fuf'pr dh tk;xhA

ijUr] yM ,fDtth'ku ,DV d v/khu tkp djr le; lekgrk nk vlljk dh lgk;rk yxk] ftue l ,d jkT; ljdkj }kjk fu;r le; d Hkhrj eukuhr l{ke 0;fdr gkxk vkj nljk 0;fDr lc) Lokeh }kjk vFkok ;fn mDr Lokeh bld fy, lekgrk }kjk fu;r le; d Hkhrj vllj eukuhr u dj] rk Lo; lekgrk }kjk eukuhr gkxkA

¼2½ tc fdlh ,l ijko'k"k d eY; d lc/k e] ftl jkT; ljdkj bl vf/kfu;e d v/khu mDr eY; ij vftr dju d fy, 'kfDr lEiUu g] ;k bl vf/kfu;e d v/khu fd; x; dk; d fy;] jkT; ljdkj }kjk fn; tku oky eY; d lc/k e fookn mB rk lekgrk nk vlljk dh lgk;rk yxk ftle ,d jkT; ljdkj }kjk eukuhr l{ke 0;fDr gk vkj nljk 0;fDr lc) Lokeh }kjk vFkok ;fn mDr Lokeh bld fy, lekgrk }kjk fu;r le; d Hkhrj vllj eukuhr u dj] rk Lo; lekgrk }kjk eukuhr gkxkA

¼3½ mi/kkjk ¼1½ ;k yM ,fDoth'ku ,DV] 1894 ¼1] 1894½ e fdlh ckr d gkr g, Hkh] ,l fdlh ijko'k"k dk ftld vfuok; vtu d lc/k e /kkjk 22 dh /kkjk ¼2½ ;k /kkjk 25 dh mi/kkjk ¼1½ d v/khu vkn'k fn;k x;k gk] eY; ;k evkotk fu/kkfjr djr le; mDr ijko'k"k d ,frgkfld ;k ijkrRoh; egRo d dkj.k mld eY; e gb of) ij fopkj ugh fd;k tk;xkA

idh.k

28- 'kfDr dk iR;k;ktu %&

jkT; ljdkj ljdkjh xtV e vf/klpuk }kjk ;g fun'k n ldxh fd bl vf/kfu;e }kjk ;k mld v/khu jkT;&ljdkj dh inÙk 'kfDr;k dk i;kx] ml fun'k e mfYyf[kr 'kÙkk d v/khu jgr g,] jkT; ljdkj d v/khuLFk ,l inkf/kdkjh ;k ikf/kdkjh Hkh dj ldx tk ml fun'k e mfYyf[kr gkA

29- ijko'k"k d 0;kikj d fy; ykbll %&

dkb Hkh 0;fDr] ,fUVfDoVht ,.M vkb Vtl ,DV] 1972 ¼52] 1972½ dh /kkjk 8 d mic/kk d vulkj dUnh; ljdkj }kjk fn; x; ykbll d v/khu gh fdUgh ijko'k"kk ,o dyk fuf/k;k dk 0;kikj dj ldxk] vFkok ughA

30- ijko'k"k dh fcØh] vkfn dk otu %&

dkb Hkh 0;fDr ,fUVfDoVht ,.M vkV Vtl ,DV] 1972 ¼52] 1972½ dh /kkjk 5 ,o 8 d mic/kk d v/khu jgr g, jkT; ljdkj dh vuKk d fcuk] u rk fdlh ijko'k"k ;k dykfuf/k dh fcØh djxk] u ml gVk;xk vFkok mldk nku djxk ;k mld LokfeRo dk vU;Fkk vrfjr djxkA

31- fdlh ijko'k"k dh tkp dju vkj mlk QkVkxkQ yu dk ikf/kdkj%&

jkT; ljdkj }kjk bl fufeÙk ikf/kdr dkb ijkrRo inkf/kdkjh] fdlh ,l ijko'k"k dh tkp dj ldxk vkj mldk QkVkxkQ y ldxk tk fdlh 0;fDr ;k /kkfed lLFkk vFkok ¼ikboV½ futh lxgky; d dCt ;k vfHkj{kk e gkA

32- fdlh ijko'k"k d ckj e ?kk"k.kk %&

¼1½ tk dkb 0;fDr fdlh ijko'k"k dk Lokeh gk vFkok dkb ijko'k"k mld dCt] vfHkj{kk ;k fu;=.k e gk] og bl vf/kfu;e d ikjHk d lkB fnuk d Hkhrj bl vk'k; dh ?kk"k.kk fun'kd dk vFkok ;Fkkfofgr ikf/kdkjh dk ;Fkkfofgr Qkje e djxkA

½2½ bl vf/kfu;e d ioÙk gku d ckn] tk dkb 0;fDr fdlh ijko'k"k dk Lokeh gk vFkok dkb ijko'k"k mld dCt] vfHkj{kk ;k fu;=.k e vk; og ,l ijko'k"k dk Lokeh gku ;k mlviu dCt] vfHkj{kk ;k fu;=.k e yu d iUng fnuk d Hkhrj fun'kd vFkok ;Fkkfofgr ikf/kdkjk] dk] ;Fkkfofgr Qkje e bl vk'k; dh ?kk"k.kk djxk ijUr mi;Dr mic/k Hkkjrh; ijkrRo lo{k.k d inkf/kdkfj;k ij ykx ugh gkxA

33- ijko'k"k d [kk tku dh fjikV %&

tk dkb 0;fDr fdlh ijko'k"k dk Lokeh gk vFkok ¼dkb ijko'k"k½ mld dCt] vfHkj{kk ;k fu;=.k e dkb ijko'k"k gk] og mld [kku ;k u"v gku dh n'kk e ijko'k"k d [kku ;k u"V gku d lkB fnuk d Hkhrj ;Fkkfofgr ikf/kdkjh dk ;Fkkfofgr Qkje e bldh tkudkjh nxkA

34- io'k] ryk'kh] tlrh bR;kfn dh 'kfDr %&

¼1½ dkb 0;fDr tk ljdkjh inkf/kdkjh gk rFkk tk ,rnFk jkT; ljdkj }kjk ikf/kdr gk] bl vf/kfu;e d micU/kk d vuikyu gr vFkok viu dk lr"V djr g, fd bl vf/kfu;e d mic/k vuikfyr g, g %&

¼i½ fdlh LFkku e io'k rFkk mlh ryk'kh dj ldrk gA

¼ii½ fdlh ijko'k"k vFkok dykfuf/k dk tlr djldrk g ftld lc/k e mlIng gk fd bl vf/kfu;e dk dkb mic/k mYyf?kr gvk g vFkok gk jgk g vFkok gku okyk g rFkk rRi'pkr bl idkj tlr ijko'k"k vFkok dykfuf/k dk U;k;ky; e i'k ¼iLrr½ dju gr rFkk i'k dju d le; rd mldh i.k vfHkj{kk d fufeÙk leLr vko';d mik; dj ldrk gA

½2½ ryk'kh vkj tlrh l lcf/kr vkikjkf/kd nM ifØ;k lfgrk] 1973 dh /kkjk 100¼1½] 100¼3½] 100¼4½ ,o 100 ¼5½ d mic/k] tgk rd lHko gk] bl /kkjk d vUrxr ryk'kh vkj tlrh e Hkh ykx gkxA

35- dkb oLr vkfn ijko'k"k vFkok dykfuf/k g vFkok ugh] bl fuf'pr ju dh 'kfDr %&

;fn ,lk i'u mB fd dkb oLr] inkFk] pht vFkok gLry[k fyf[kr iek.k vFkok vU; iy[k bl vf/kfu;e d vUrxr ijko'k"k vFkok dykfuf/k g fd ugh] fun'kd] ijkrro ,o lxgky;] >kj[k.M vFkok mld }kjk ikf/kdr fdlh inkf/kdkjh dk ;g ekeyk lki fn;k tk;xk rFkk fun'kd vFkok ikf/kdr inkf/kdkjh dk fu.k; vfre gkxkA

36- 'kkfLr %&

¼1½ ;fn dkb 0;fDr %&

¼d½ fdlh ljf{kr Lekjd dk u"V] LFkkukUrfjr] {kfrxLr] ifjofrr] fo:fir] vkinkxLr ;k nli;kftr dj] ;k

¼[k½ fdlh ljf{kr Lekjd dk Lokeh ;k n[kydkj gkr g, /kkjk 8 dh mi/kkjk ¼1½ ;k /kkjk 9 dh mi/kkjk ¼1½ d v/khu fdlh vkn'k dk mYy?ku dj] ;k

¼x½ fdlh ljf{kr Lekjd l dkb efÙk] uDdk'kh] ifrek] v/;kfpr] ijky[k ;k bl idkj dh dkb vU; oLr gVk;] ;k

¼?k½ /kkjk&18 dh mi/kkjk ¼1½ dk mYy?ku djr g, dkb dk; dj] ;k

¼M-½ /kkjk&32 dh vi{kkulkj ?kk"k.kk dju e vlQy jg] ;k

¼p½ /kkjk&33 dh vi{kkvk d vulkj lpuk nu e vlQy jg] rk ml rhu eghu rd d dkjkokl dk ;k ikp gtkj :i; rd d teku dk ;k nkuk idkj dk n.M fn;k tk ldxk

½2½ tk 0;fDr %&

¼d½ jkT; ljdkj }kjk vunku ykbll d fcuk ijko'k"k dk 0;kikj djxk] vFkok

¼[k½ jkT; ljdkj dh vuefr d fcuk dkb ijko'k"k ;k dykfuf/k cpxk] gVk,xk ;k ml nku djxk ;k vU;Fkk mld LokfeRo ;k vUrj.k djxk] vFkok

¼x½ fdlh efnj] ijkrRo LFky] ikboV lxgky; vFkok egRoi.k /kkfed LFkku l fdlh ijko'k"k ;k dykfuf/k dh pkjh djxk] og rhu o"k rd d dkjkokl ;k ipkl gtkj :i; rd d teku l ;k nkuk l nMuh; gkxkA

¼3½ ;fn dkb 0;fDr /kkjk 24 dh mi/kkjk ¼1½ d v/khu tkjh dh x;h vf/klpuk dk mYy?ku djr g, dkb ijko'k"k gVko] rk ml iPphl gtkj :i; rd d teku dk nM fn;k tk ldxk vkj U;k;ky; fdlh 0;fDr dk ,l mYy?ku dk nk"kh Bgjkr g, dkb ijko'k"k gVko] rk ml iPphl gtkj :i; rd d teku dk nM fn;k tk ldxk vkj U;k;ky; fdlh 0;fdr dk ,l mYy?ku dk nk"kh Bgjkr g, ;g vkn'k n ldxk fd og 0;fDr mDr ijko'k"k dh mlh txg iu%LFkkfir dj n tgk l og gVk;k x;k gkA

37. vijk/kk d ijh{k.k dk {k=kf/kdkj %&

f}rh; J.kh U;k;kf;d nMkf/kdkjh U;k;ky; l fuEu Lrj dk dkb U;k;ky; bl vf/kfu;e d v/khu fdlh vijk/k dk ijh{k.k u djxkA

38. dN vijk/k lK; gkx %&

n.M ifØ;k lfgrk 1973 e fdlh ckr d gkr g, Hkh] /kkjk 36] d mi/kkjk ¼1½ d [k.M ¼d½ ;k [k.M ¼[k½ rFkk mi/kkjk&2 d [k.M&x d v/khu fd;k x;k vijk/k bl lfgrk d vFk e lK; vijk/k le>k tk;xkA

39. teku d lc/k e fo'k"k mic/k %&

nM ifØ;k lfgrk 1973 dh /kkjk 29 e fdlh ckr d gkr g, Hkh jkT; ljdkj }kjk bl lc/k e fo'k"k :i l 'kfDr inÙk iFke J.kh d fdlh U;kf;d nMkf/kdkjh d fy; ;g fof/klxr gkxk fd og bl vf/kfu;e d v/khu nk gtkj :i; l vf/kd teku l nMuh; vijk/k d fy, nk"kh Bgjk; x; 0;fDr dk nk gtkj :i; l vf/kd teku dh l tk nA

40. jkT;&ljdkj dk n; jde dh olyh %&

bl vf/kfu;e d v/khu fdlh 0;fDr }kjk jkT; ljdkj dk n; jde] fun'kd ;k mld }kjk bl lc/k e ikf/kdr fdlh ijkrRo inkf/kdkj }kjk tkjh fd; x; lfVfQdV ij] mlh jhfr l olyh tk;xh tl Hk&jktLo dk cdk;k olyk tkrk gA

41. ikphu Lekjd vkfn] ftudk lj{k.k ckn e vko'; u jg tk;%&

;fn jkT; ljdkj dh jk; e bl vf/kfu;e d mic/kk d v/khu fdlh ikphu ;k ,frgkfld Lekjd ;k ijkrRo & LFky vkj vo'k"k dk lj{k.k vko'; u jg x;k gk rk jkT; ljdkj ljdkjh xtV e vf/klpuk }kjk ;g ?kkf"kr dj ldxh fd ;FkkfLFkfr] og ikphu ,o ,frgkfld Lekjd ;k ijkrRo&LFky vkj vo'k"k bl vf/kfu;e d i;ktukFk vc ljf{kr {k= ugh jg x;kA

42. Hky] vkfn d l/kkj dh 'kfDr %&

bl vf/kfu;e d }kjk ;k v/khu ljf{kr Lekjd ;k ljf{kr {k= d :i e ?kkf"kr fdlh ikpuh Lekjd ;k ijkrRo LFky vkj vo'k"k d fooj.k e ;fn dkb y[ku&v'kf)] Li"V xyrh ;k vkdfLed Hky&pd d QyLo:i =fV gb gk rk] ml jkT; ljdkj] fdlh Hkh le;] ljdkjh xtV e vf/klpuk }kjk 'k) dj ldxhA

43. bl vf/kfu;e d v/khu dh xb dkjokb dh j{kk %&

bl vf/kfu;e }kjk inÙk] 'kfDr d i;kx e fd, x, ;k lnHkkoiod fd, tku l vfHkir fdlh dke d lc/k e fdlh ykd lod d fo:) evkotk d fy, okn u py;k tk,xk] u dkb nM&dk;kgh gh pykb tk;xhA

44. fu;e cuku dh 'kfDr %&

¼1½ jkT;&ljdkj xtV e vf/klpuk }kjk bl vf/kfu;e d i;ktuk d dk;kUo;u d fy; fu;e cuk ldxkA

½2½ fo'k"k :i l rFkk ioxkeh 'kfDr dh 0;kidrk ij foijhr iHkko Mky fcuk] ,l fu;ek e fuEu fdlh ;k lHkh ckrk dk mic/k fd;k tk ldxkA

¼d½ fdlh ljf{kr Lekjd d fudV [kuu] mR[kuu] [knkb] foLQkV ;k bl idkj dk dkb vU; dk; vFkok ,l Lekjd l lVh Hkfe ij Hkou&fuek.k vkj dkb vikf/kdr Hkou rkMuk] ifrfl) djuk vFkok ykbll }kjk ;k vU;Fkk fofu;fer djukA

¼[k½ ljf{kr {k=k e ijkrÙoh; i;ktukFk [knkb dju d fy, ykbll vkj vuefr nuk] ikf/kdkfj;k }kjk vkj fdu 'kÙkk vkj c/ktk d v/khu jgr g, ,l ykbll fn; tk;x] ykbll&/kkfj;k l ifrHkfr yuk vkj ,l ykbllk d fy, Qhl yukA

¼x½ fdlh ljf{kr Lekjd e lkotfud io'k dk vf/kdkj vkj bld fy; Qhl ;fn dkb gk] yukA

¼?k½ /kkjk&22 dh mi/kkjk ¼1½ d [kM ¼d½ d v/khu fdlh ijkrRo inkf/kdkjh ;k ykbll/kkjh dk fjikV dk QkjQ vkj mldhb fo"k;oLrA

¼M-½ /kkjk&18 ;k /kkjk 24 d v/khu vuefr d fy; vkonu dju dk Qkje vkj mle Hkj tku oky C;kjA

¼p½ bl vf/kfu;e d v/khu vihy dju dk Qkje vkj jhfr vkj fdru le; d Hkhrj ;g nk;j fd;k tk ldxkA

¼N½ bl vf/kfu;e d v/khu vkn'k ;k ukfVl rkfey dju dh jhfrA

¼t½ ijkrÙoh; i;ktukFk [knkb vkj bl rjg dk vU; dk; dju dh jhfr] vkj

¼>½ dkb vU; fo"k;] tk fofgr djuk gk ;k fd;k tk ldA

¼3½ bl /kkjk d v/khu cuk, x, fdlh fu;e e mic/k fd;k tk ldxk fd mldk Hkx fuEu :i l nMuh; gkxk %&

¼1½ mi/kkjk&2 d [kM&d d ilx e cu fu;e dh n'kk e rhu eghu rd dk dkjkokl ;k iPphl gtkj :i; rd tekuk ;k nkukA

¼2½ mi/kkjk&2 d [kM&[k d ilx e cu fu;e dh n'kk e iPphl gtkj :i; rd tekuk] vkj

¼3½ mi/kkjk&2 d [kM&x d ilx e cu fu;e dh n'kk e iPphl gtkj :i; rd tekukA

¼4½ bl /kkjk d v/khu cuk gjd fu;e cuu d ckn ;Fkk'kh?k] >kj[k.M fo/kku lHkk d le{k tc og l= e gk] dy pkng fnuk dh vof/k d fy; j[kk tk;xk] tk pkg ,d gh l= e iM ;k yxkrkj nk l=k e vkj ftl l= e ;g bl idkj j[kk tk, ml l= ;k mlls Bhd l= dh lekfIr d io ;fn >kj[k.M fo/kku lHkk fu;e e dkb :iHkn dju d fy, lger gk] vFkok ;fn >kj[k.M fo/kku lHkk lger gk fd og fu;e u cuk;k tk,] rk og fu;e mld ckn] ;FkkfLFkfr ol :iHkfnr :i e gh iHkkoh gkxk ;k iHkkoh u gkxk] fdUr ,l dkb :iHkn;k vo'kU;u ml fu;e d v/khu igy dh x;h fdlh ckr dh ekU;rk ij ifrdy iHkko u Mkyxk

45. bl vf/kfu;e dk dfri; ikpuh Lekjdk ;k ijkrRo LFkyk vkj vo'k"kk ;k ijko'k"kk ij ykx u gkuk %&

bl vf/kfu;e dh dkb ckr fuEufyf[kr fo"k;k ij ykx u gkxh&

¼d½ ,l ikphu Lekjdk ;k ijkrRo&LFkyk vkj vo'k"kk ij] tk ,fU'k,V ekU;eVl ,.M vkD;kykftdy lkbVl ,.M fjeUl ,DV] 1958 ¼24] 1958½ d }kjk ;k v/khu ;k lln }kjk cukb xb fdlh vU; fof/k d v/khu jk"Vh; egÙo oky ?kkf"kr fd, x, gk ;k bld ckn ?kkf"kr fd, tk;A

¼[k½ ,l ijko'k"kk ij] ftu ij ,fU'k,V ekU;eVl ,.M vkD;kykftdy lkbVl ,.M fjeUl ,DV] 1958 ¼24] 1958½ d mic/k rRdky ykx gkA

¼x½ ,l ikphu Lekjdk ;k ijkrRo LFkyk vkj vo'k"kk ;k ijko'k"kk ij] ftu ij ,fU'k,V ekU;eVl fi;o'ku ,DV] 1904 ¼7] 1904½ d mic/k rRdky ykx gkA

mí'; ,o gr

>kj[k.M jkT; viu xkjoe;h bfrgkl ,o ijkrkfRod ?kjkgjk l ifji.k jkT; gAbl jkT; e okLrdyk] ykd dyk dh yEch J[kyk ektn g] ftle çkx ,frgkfld dky l ydj fcfV'k dky rd d /kjkgj ektn gA

jkT; ljdkj dk ;g iuhr nkf;Ro g dh jkT; e vofLFkr ijkrkfRod /kjkgjk ,o okLrdyk —fr;k dk ljf{kr] ljf{kr ,o lof/kr fd;k tk;A ,lh mí'; l Þ>kj[k.M çkphu Lekjd vkj ijkrRoLFky vo'k"k rFkk dykfuf/k fo/k;d] 2016Þ dk xBu fd;k x;k gA

mi;ä mí'; gr lHkh vko';d çko/kku bl vf/kfu;e e fd; x, g] ftl vf/kfu;fer djuk gh bl vf/kfu;e dk vHkh"V gA

¼vej dekj ckmjh½

Hkkj lk/kd lnL;

अधिसूचना

23 फरवरी, 2015 ई0।

संख्या-आंत0-02/2015- 36 --वि0स0। एतद द्वारा सर्वसाधारण की जानकारी के लिए प्रकाषित किया जाता है कि झारखण्ड विधान सभा की प्रक्रिया तथा कार्य संचालन के नियम-223(1) के अधीन माननीय अध्यक्ष,झारखण्ड विधान सभा ने झारखण्ड विधान सभा की आंतरिक संसाधन एवं केन्द्रीय सहायता समिति की गठन वर्ष-2015-16 के लिए निम्न प्रकार से किया हैः-

श्री प्रदीप यादव,	स0वि0स0	सभापति
श्री जगरनाथ महतो,	स0वि0स0	सदस्य,
श्री दशरथ गागराई,	स0वि0स0	सदस्य।

श्री प्रदीप यादव,स0वि0स0 इस समिति के सभापति तथा सभा सचिव इसके सचिव होंगे समिति का कार्यकाल अधिसूचना निर्गत होने की तिथि से नई समिति के गठन तक होगा ।

अध्यक्ष,झारखण्ड विधान सभा के आदेश से,
सुशील कुमार सिंह,
प्रभारी सचिव,
झारखण्ड विधान सभा,राची ।

अधिसूचना

23 फरवरी, 2015

संख्या-प्रदूषण-01/2015 – 48 --वि0स0। एतद् द्वारा सर्वसाधारण की जानकारी के लिए यह प्रकाषित किया जाता है कि झारखण्ड विधान सभा की प्रक्रिया तथा कार्य संचालन के नियम-257 के अधीन माननीय अध्यक्ष, झारखण्ड विधान सभा ने झारखण्ड विधान सभा की पर्यावरण एवं प्रदूषण नियंत्रण समिति का गठन वर्ष2015-16 के लिए निम्न प्रकार से किया है:-

(1)	श्री योगश्वर महतो	स0वि0स0	सभापति
(2)	श्री राम कुमार पाहन	स0वि0स0	सदस्य

(3) श्री रधुनन्दन मंडल स0वि0स0 सदस्य।

श्री योगश्वर महतो, स0वि0स0 इस समिति के सभापति तथा सभा सचिव इसके सचिव होंगे ।

समिति का कार्यकाल अधिसूचना निर्गत होने की तिथि से एक वर्ष का होगा ।

अध्यक्ष, झारखण्ड विधान सभा के आदेश से,
सुशील कुमार सिंह,
प्रभारी सचिव,
झारखण्ड विधान सभा, राँची ।

अधिसूचना

19 मार्च, 2015 ई०

संख्या-अ०पि०क०व०क०स०-01/14-121 /वि०स० | सभा सचिवालय की अधिसूचना संख्या-अ०पि०व०क०स०-01/14-54, दिनांक 23 फरवरी, 2015 के क्रम में सर्वसाधारण की जानकारी के लिए प्रकाशित किया जाता है कि श्री बादल,स०विस० को झारखण्ड विधान सभा के अल्पसंख्यक, पिछड़ा एवं कमजोर वर्ग कल्याण समिति के सदस्य के रूप में मनोनीत किया जाता है |

माननीय अध्यक्ष ,झारखंड विधान-सभा के आदेश से,
सुशील कुमार सिंह,
प्रभारी सचिव
झारखंड विधान-सभा,रांची |

अधिसूचना

23 फरवरी, 2015 ई0।

संख्या-प०वि०स०-01/2015- 60–वि०स०। एतद द्वारा सर्वसाधारण की जानकारी के लिए यह प्रकाषित किया जाता है कि माननीय अध्यक्ष,झारखण्ड विधान सभा द्वारा झारखण्ड विधान सभा की प्रक्रिया तथा कार्य संचालन के नियम-223 (1) के अधीन पर्यटन विकास समिति का गठन वर्ष 2015-16 के लिए निम्न प्रकार किया गया है:-

श्री कुशवाहा शिवपूजन मेहता, स0वि0स0 सभापति

श्री इरफान अंसारी, स0वि0स0 सदस्य

श्री योगेन्द्र प्रसाद, स0वि0स0 सदस्य ।

श्री कुशवाहा शिवपूजन मेहता,स0वि0स0 समिति के सभापति होगें तथा सभा सचिव इस समिति के सचिव होंगे ।

समिति का कार्यकाल अधिसूचना निर्गत होने की तिथि से नई समिति के गठन तक के लिए होगा ।

अध्यक्ष,झारखण्ड विधान सभा के आदेश से,
सुशील कुमार सिंह,
प्रभारी सचिव,
झारखण्ड विधान सभा,राची ।

अधिसूचना

17 मार्च,2016

संख्या-01 स्था०-01/2015- 662 --वि०स०|सभा सचिवालय के स्विक्रित्यादेश स०-538, दिनांक 8 मार्च, 2016 के आलोक में माननीय अध्यक्ष,झारखंड विधान-सभा के आप्त सचिव के अस्थाई (सावधिक) पद पर डॉ० राजीव कुमार (वाहृय व्यक्ति) को वेतनमान-9300-34800 /-रु०+ग्रेड पे 5400/-रु० के प्रथम प्रक्रम-20,280 /-रु० एवं उसपर अनुमान्य महंगाई भत्ते पर दिनांक 1 मार्च, 2016 के पूर्वा० से 28 फरवरी, 2017 के अप० तक अथवा माननीय अध्यक्ष महोदय के कार्यकाल तक अथवा माननीय अध्यक्ष महोदय के इच्छापर्यन्त (इसमें जो पहले घटे) तक सेवा विस्तारित की जाती है

आदेश से,
प्रवीण साफी,
अवर सचिव,झारखंड विधान-सभा,रांची |

अधिसूचना

27 मार्च, 2015 ई०

संख्या-सदा०स०-01/15-67 --वि०स०| एतद द्वारा सर्वसाधारण की जानकारी के लिए यह प्रकाशित किया जाता है कि माननीय अध्यक्ष झारखंड विधान-सभा सभा ने सभा सचिवालय की अधिसूचना संख्या-40, दिनांक 23 जनवरी, 2015 के क्रमांक-04 पर उद्दत श्री शशिभूषण सामाड, सदस्य को सदाचार समिति की सदस्यता से मुक्त करते हुए प्रत्यायुक्त विधान समिति का सदस्य मनोनीत किया है |

अधिसूचना निर्गत होने की तिथि से श्री शशिभूषण सामाड,स०विस०,सदाचार समिति के सदस्य नहीं रहेंगे |

माननीय अध्यक्ष ,झारखंड विधान-सभा के आदेश से,
सुशील कुमार सिंह,
प्रभारी सचिव
झारखंड विधान-सभा,रांची |

अधिसूचना

27 फरवरी, 2015ई०

संख्या-प्रत्या०वि०स०-01/15-69 --वि०स०| एतद द्वारा सर्वसाधारण की जानकारी के लिए प्रकाशित किया जाता है कि सभा सचिवालय की अधिसूचना संख्या-32, दिनांक 23 फरवरी, 2015 के क्रम में श्री नारायण दास स०वि०स० के स्थान पर श्री शशिभूषण सामाड, स०वि०स० को झारखण्ड विधान सभा की प्रत्यायुक्त विधान समिति का सदस्य शेष अवधि के लिए माननीय अध्यक्ष ने मनोनीत किया है |

अध्यक्ष ,झारखंड विधान-सभा के आदेश से,
सुशील कुमार सिंह,
प्रभारी सचिव
झारखंड विधान-सभा,रांची |

अधिसूचना

29 **मार्च,** 2016

संख्या-कार्मिक-18/2016-702--वि०स०| सर्वसाधारण की जानकारी के लिए यह प्रकाशित किया जाता है की श्री विदेश सिंह,सदस्य,झारखण्ड विधान-सभा क्षेत्र संख्या-75 (**पांकी**) **का दिनांक-**28.03.2016 **एवं** 29.03.2016 **की मध्य रात्री में** 01.15 **बजे असामयिक निधन हो जाने के फलस्वरूप उक्त स्थान,उक्त तिथि से रिक्त हो गया है |**

अध्यक्ष, झारखंड विधान-सभा के आदेश से,
विनय कुमार सिंह,

प्रभारी सचिव

अधिसूचना

23 फरवरी, 2015

संख्या-लो०ले०स०-01/2015-76 –वि०स०। एतद् द्वारा सर्वसाधारण की जानकारी के लिए प्रकाषित किया जाता है कि झारखण्ड विधान सभा की प्रक्रिया तथा कार्य संचालन नियमावली के नियम-237 (1) के तहत् माननीय अध्यक्ष, झारखण्ड विधान सभा ने झारखण्ड विधान सभा की लोक लेखा समिति का गठन वर्ष-2015-16 के लिए निम्न प्रकार किया है:-

1-	श्री स्टीफन मराण्डी,	स0वि0स0	सभापति
2-	श्री नलिन सोरेन,	स0वि0स0	सदस्य
3-	श्री नारायण दास,	स0वि0स0	सदस्य
4-	श्रीमती गंगोत्री कुजूर,	स0वि0स0	सदस्या
5-	श्री कुणाल षाड़गी,	स0वि0स0	सदस्य

श्री स्टीफन मराण्डी , स0वि0स0 इस समिति की सभापति एवं सभा सचिव इसके सचिव होंगे। समिति का कार्यकाल अधिसूचना निर्गत होने की तिथि से एक वर्ष का होगा।

अध्यक्ष,झारखण्ड विधान सभा के आदेश से,
सुशील कुमार सिंह,
प्रभारी सचिव,
झारखण्ड विधान सभा,रांची ।

अधिसूचना

23 फरवरी, 2015

संख्या-झा0वि0स0(या0)-01/15- 86--वि0स0। एतद् द्वारा सर्वसाधारण की जानकारी के लिए यह प्रकाषित किया जाता है कि झारखण्ड विधान सभा की प्रक्रिया तथा कार्य संचालन के नियम-229 के अधीन वर्ष2015-16 के लिए विधान सभा की याचिका समिति का गठन निम्न प्रकार किया जाता है:-

(1)	श्री जी0 जे0 गालस्टीन	स0वि0स0	सभापति
(2)	श्री अनन्त कुमार ओझा	स0वि0स0	सदस्य
(3)	डा0 अनिल मुर्मू	स0वि0स0	सदस्य।

(i) श्री जी0 जे0 गालस्टीन, स0वि0स0 इस समिति के सभापति तथा सभा सचिव इसके सचिव होंगे।

(ii) इस समिति का कार्यकाल अधिसूचना निर्गत होने की तिथि से एक वर्श के लिए होगा।

माननीय अध्यक्ष, झारखण्ड विधान सभा के आदेश से,
सुशील कुमार सिंह,
प्रभारी सचिव,
झारखण्ड विधान सभा, राँची ।

अधिसूचना

23 फरवरी, 2015 ई०

संख्या-01आश्वा-02/15-88 --वि०स०| सर्वसाधारण की जानकारी के लिए प्रकाशित किया जाता है की झारखण्ड विधान सभा की प्रक्रिया तथा कार्य संचालन के नियम-243 के अधीन माननीय अध्यक्ष ने झारखण्ड विधान सभा की सरकारी आश्वासन समिति का गठन वर्ष 15-16 के लिए निम्न प्रकार से किया है:-

1	श्री अशोक कुमार	स०वि०स०	सभापति
2	श्री जय प्रकाश भाई पटेल	स०वि०स०	सदस्य
3	श्री साधू चरण महतो	स०वि०स०	सदस्य

श्री, अशोक कुमार स०वि०स० इस समिति के सभापति एवं सभा सचिव इसके सचिव होंगे| समिति का कार्यकाल अधिसूचना निर्गत की तिथि से एक वर्ष का होगा |

अध्यक्ष ,झारखंड विधान-सभा के आदेश से,
सुशील कुमार सिंह,
प्रभारी सचिव
झारखंड विधान-सभा,रांची |

कार्मिक, प्रशासनिक सुधार तथा राजभाषा विभाग ।

अधिसूचना

2 मार्च, 2016

संख्या-4/नि0सं0-12-112/2014 का॰-1902--झारखण्ड प्रशासनिक सेवा की श्री अनिल कुमार सिंह, अंचल अधिकारी, देवरी के द्वारा उपभोग किये गये अवकाश (क) दिनांक 11 जुलाई, 2015 से 3 अगस्त, 2015 तक उपार्जित अवकाश के रूप में झारखण्ड सेवा संहिता के नियम 227, 230 एवं 248 के तहत्, (ख) दिनांक 4 अगस्त, 2015 से 24 अगस्त, 2015 तक अर्द्धवैतनिक अवकाश के रूप में झारखण्ड सेवा संहिता के नियम 232 के तहत स्वीकृत किया जाता है।

झारखण्ड राज्यपाल के आदेश से,
एच॰ के॰ सुधाँशु,
सरकार के अवर सचिव ।

अधिसूचना

3 मार्च, 2016

संख्या-3 / नि0सं0-09-135 / 2014 का॰ 1980--झारखण्ड प्रशासनिक सेवा के श्री दिगेश्वर तिवारी, संयुक्त सचिव, कृषि, पशुपालन एवं सहकारिता विभाग, झारखण्ड, राँची को दिनांक

15 जनवरी, 2016 से 26 जनवरी, 2016 तक उपार्जित अवकाश झारखण्ड सेवा संहिता के नियम 227, 230 एवं 248 के तहत स्वीकृत किया जाता है ।

झारखण्ड राज्यपाल के आदेश से,
एच॰ के॰ सुधांशु,
सरकार के अवर सचिव ।

अधिसूचना

14 मार्च, 2016

संख्या-4/से0वि0-05-09/2015 का० 2275--झारखण्ड प्रशासनिक सेवा के श्री राहुल जी आनन्द जी, कार्यपालक पदाधिकारी नगर पंचायत, गोड्डा के दिनांक 15 अक्टूबर, 2014 से 15 फरवरी, 2015 तक प्रभार रहित अवधि को उपार्जित अवकाश के रूप में झारखण्ड सेवा संहिता के नियम 227, 230 एवं 248 के तहत स्वीकृत किया जाता है ।

झारखण्ड राज्यपाल के आदेश से,
एच० के० सुधाँशु,
सरकार के अवर सचिव ।

अधिसूचना

18 मार्च, 2016

संख्या-3/नि०सं०-09-10/2015का.-2510--झारखण्ड प्रशासनिक सेवा के श्री रवि शंकर वर्मा, संयुक्त सचिव, स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, झारखण्ड, राँची का दिनांक 1 फरवरी, 2016 से 7 मार्च, 2016 तक उपार्जित अवकाश झारखण्ड सेवा संहिता के नियम 227, 230 एवं 248 के तहत स्वीकृत किया जाता है ।

झारखण्ड राज्यपाल के आदेश से,
एच० के० सुधाँशु,
सरकार के अवर सचिव ।

अधिसूचना

23 मार्च, 2016

संख्या-1/विविध-831/2014का०-2562--श्री सुमन कुमार, भा.प्र.से. (झाः2002), विशेष सचिव, कार्मिक, प्र०सु० तथा राजभाषा विभाग को अखिल भारतीय सेवाएं (छुट्टी) नियमावली 1955 के नियम 10,11,12,13,15 एवं 20 के तहत स्वीकृत गृह यात्रा रियायत सुविधा उपभोग हेतु दिनांक 18 अप्रैल, 2016 से 26 अप्रैल, 2016 तक कुल 09 दिनों के उपार्जित अवकाश की स्वीकृति दी जाती है।

2. श्री कुमार को दिनांक 16 अप्रैल, 2016 एवं 17 अप्रैल, 2016 के निवारीय/रविवारीय अवकाश को छुट्टी के प्रारम्भ में उपभोग करने की अनुमति मुख्यालय छोड़ने की अनुमति के साथ दी जाती है ।

झारखण्ड राज्यपाल के आदेश से,
अरूण कुमार सिन्हा,

सरकार के अवर सचिव ।

राजस्व, निबंधन एवं भूमि सुधार विभाग

अधिसूचना

31 मार्च, 2016

विषय:- बदलते कम्प्यूटरीकृत युग में भूधारियों को अत्याधुनिक सुविधा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से अंचल कार्यालयों में रैयतों की भूधृति अथवा धारित भूमि पर धार्य लगान अलावे सेस को पूर्ववत नकद राशि प्राप्त करने के बदले बैंकों के माध्यम से ऑन लाईन प्राप्त करने हेतु प्रक्रिया का सरलीकरण एवं निर्धारण के संबंध में।

संख्या-6/लगान निर्गम (नीति)-24/2016-1286/रा.,--वर्तमान समय में सर्वे एवं बंदोबस्त कार्यो के दौरान भूमि के प्रकृति के अनुसार सक्षम प्राधिकार (राजस्व पदाधिकारी) द्वारा काश्तकारों की भूधृति अथवा धारित भूमि पर धार्य मालगुजारी अलावे सेस की गणना कर धार्य शुल्क के रूप में नकद राशि प्राप्त कर लगान वसूलने का प्रावधान है।

2. बदलते परिवेश में राजस्व लगान निर्गत करने हेतु नगद मालगुजारी प्राप्त करने का प्रावधान अव्यवहारिक हो गया है तथा कार्यालय की पारदर्शिता पर प्रश्न चिन्ह खड़ा होने की संभावना बनी रहती है। इसके अतिरिक्त कार्यालय में नकद राशि का रहना सुरक्षात्मक दृष्टिकोण से भी उचित नहीं है। इन समस्याओं के अतिरिक्त नगद मालगुजारी जमा करने की पूर्व निर्धारित प्रक्रिया के कारण अंचल कार्यालय में पारदर्शिता नहीं दिखाई पड़ती हैं साथ ही वर्तमान समय में भू-धारियों द्वारा अंचल कार्यालय में नकद मालगुजारी राशि जमा करने में अनावश्यक विलम्ब होता है एवं अनावश्यक परेशानी का भी सामना करना पड़ता है।

3. अतः विभिन्न अंचल कार्यालयों में विभिन्न रैयतों/काश्तकारों से पूर्व निर्धारित प्रक्रिया के अंतर्गत नगद मालगुजारी के रूप में ली जाने वाली लगान राशि को बैंकों के माध्यम से ऑनलाईन जमा कराया जाए। बदलते कम्प्यूटरीकृत युग में भू-धारियों को अत्याधुनिक सुविधा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से अंचल कार्यालयों में रैयतों की भूधृति अथवा धारित भूमि पर धार्य लगान अलावे सेस को अंचल कार्यालय द्वारा पूर्व में निर्धारित नकद राशि प्राप्त करने के बदले बैंकों के माध्यम से ऑन लाईन प्राप्त करने हेतु प्रक्रिया का सरलीकरण तथा प्राप्त लगान राशि

की प्रविष्टि ससमय लगान पंजी 3A एवं 3AA में करते हुए उक्त प्राप्त राशि को बैंक के माध्यम से संबंधित कोषागार में जमा किया जाएगा।

4. विभागीय निर्गत संकल्प ज्ञापांक-1257/रा., दिनांक-30.03.2016 के पश्चात राजस्व कार्यो का सुचारू एवं त्वरित निष्पादनार्थ बैंक के माध्यम से व्दसपदम लगान प्राप्ति हेतु निम्नलिखित प्रक्रिया निर्धारित की जाती है:-

(क) online लगान प्राप्ति हेतु Software तैयार कर लिया गया है एवं उसका Desktop Mode & Mobile App. दोनों ही तैयार है, ताकि प्रज्ञा केन्द्रों से भी Access किया जा सके एवं Smart mobile phone से भी Access किया जा सके। उक्त Software का Test kit run करवा कर कई बार Check कर लिया गया है। यह सुनिश्चित करने का प्रयास किया गया है कि यह Fullfroof हो।

(ख) Online के माध्यम से निर्गत प्रत्येक रसीद का अपना एक खास कोड (QR Code) होगा। Online लगान रसीद निर्गत करने से एक खास लाभ यह है, कि संबंधित रैयत के Register II के Online database को automatic update कर देगा।

(ग) Software में यह सुनिश्चित किया गया है कि यदि किसी व्यक्ति का एक खास खाता एवं एक प्लॉट का एक वित्तीय वर्ष का Online lagan रसीद निर्गत कर दिया जाएगा, तो lagan Receipt का pdf create होगा एवं software में save हो जाएगा जिसे कोई भी व्यक्ति Access कर सकेगा एवं प्रति निकाल सकेगा परंतु यह विवाद नहीं पैदा करेगा क्योंकि यह संबंधित Register II के database कायम जमाबंदी के ही भुगतेय लगान रसीद के रूप में दर्ज होगा एवं Register II का database भी उसी अनुसार Auto update होगा। अतः जमकर्त्ता कौन है उसपर इसकी निर्भरता नहीं होगी, ना ही दुबारा एक ही वित्तीय वर्ष के लिए Online Payment किया जा सकेगा।

(घ) Online लगान रसीद के संदर्भ में जमाबंदी रैयतों को यह सुविधा दी गई है कि यदि Online data base में रैयत का बकाया वास्तविक रूप में show नहीं करे तो रैयत निर्गत मैनुअल लगान को update कर अपना दावा प्रस्तुत कर सकेंगे कि उन्होंने अद्यतन वर्ष तक का (जिस वित्तीय वर्ष का लगान रसीद निर्गत किया जा चुका है) लगान pay कर दिया है एवं रैयत के इस दावे की संपुष्टि/अपुष्टि राजस्व कर्मचारी 48 घंटे के अंदर (2 दिनों के अंदर) (अपने login ID & Password के द्वारा) करेंगे एवं कारणों को अभिलिखित करना होगा।

(ङ) Online लगान pay करने के लिए रैयत को jharbhoomi.nic.in (राजस्व विभाग के वेबसाईट) पर Online लगान payment के option पर जाना होगा। संबंधित option पर जाने पर रैयत को चार option मिलेंगे -

i. रजिस्टर II देखें

ii. बकाया देखें

iii. पिछला भुगतान देखें

iv. ऑन लाईन भुगतान करें

5. संबंधित अंचल के राजस्व पदाधिकारी/कर्मचारी scan करके रसीद को update करेंगे। संबंधित अंचल कार्यालय को 48 घण्टे के अन्दर उसकी सम्पुष्टि कर लेनी होगी। प्रत्येक दिन संबंधित अंचल कार्यालय Password खोलकर login की जांच कर निर्धारित समय के अंदर कार्रवाई करेंगे। कम्प्यूटर जनित लगान रसीद का उपयोग किसी भी न्यायालय में भू-स्वामित्व तथा अन्य सदृश्य विषयों में साक्ष्य के रूप में उपयोग नहीं किया जा सकेगा। संदिग्ध जमाबंदियों से संबंधित भूमि का online रसीद निर्गत नहीं किया जायेगा ।

झारखण्ड के राज्यपाल के आदेश से,
उदय प्रताप,
सरकार के संयुक्त सचिव ।

परिवहन विभाग

संकल्प

18 मार्च, 2016

विषय : झारखंड राज्य सड़क सुरक्षा नीति-2016 के सुत्रीकरण के संबंध में ।

संख्या-परि(वि)(स)सु(वि)-143/2015-460--झारखंड राज्य में सड़क दुर्घटनाओं की संख्या में वृद्धि के कारण उसके घातक परिणामों से सरकार अत्यन्त चिन्तित है। विदित हो कि सड़क दुर्घटनाएं एक सार्वजनिक स्वास्थ्य का मुद्दा बन गयी है एवं इसके पीड़ित मुख्य रुप से समाज के कमजोर वर्गों से हैं ।

सड़क दुर्घटनाओं से न सिर्फ सड़क का उपयोग करने वाले बल्कि वाहन चलाने वाले भी प्रभावित होते हैं। फलस्वरुप सड़क सुरक्षा के संबंध में एक पूर्ण प्रस्ताव की आवश्यकता है । राज्य सरकार का यह मानना है कि सड़क दुर्घटनाओं एवं उसके कारण आये चोटों और उनके घातक परिणामों में कमी राज्य एवं केन्द्र सरकारों की संयुक्त जिम्मेदारी एवं प्रयासों से ही संभव है ।

उपर्युक्त के आलोक में राज्य सरकार सड़क दुर्घटनाएँ न हो एवं यदि दुर्घटना घट जाती है तो उसके घातक परिणामों में कमी लाने के लिए प्रतिबद्ध है। इस हेतु सरकार निम्न नीति निर्धारित करती है -

<u>नीति</u>

1. <u>सड़क सुरक्षा के संबंध में जागरुकता</u>

राज्य सरकार सड़क सुरक्षा में महत्वपूर्ण एवं गुणात्मक सुधार के लिए सड़क सुरक्षा की समस्याओं, उसके सामाजिक एवं आर्थिक प्रभाव के बारे में नागरिकों में जागरुकता को बढ़ावा देने का प्रयास करेगी ।

राज्य सरकार सड़क सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न हितकारकों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए नागरिकों को सुरक्षा के संबंध में जागरुक करेगा ।

2. <u>संस्थागत व्यवस्थाओं को मजबूत बनाना</u>

राज्य सरकार सड़क सुरक्षा के कार्यान्वयन एवं उसमें आने वाली समस्याओं के समाधान के लिए प्रभावी संस्थागत व्यवस्था की स्थापना करते हुए सड़क सुरक्षा कोष (Road Safety Fund) की स्थापना करेगी ।

3. <u>सुरक्षित सड़क संरचना स्थापित करना</u>

राज्य सरकार सड़को के सुरक्षित डिजाइन तैयार करने के उपायों को बढ़ावा देगी। सरकार सुनिश्चित करेगी कि सड़क डिजाईन में उपलब्ध सबसे अच्छे तरीको एवं उपायो को इसमें शामिल किया जाय। सरकार सड़क दुर्घटना में कमी लाने के लिए सड़को के Black Spot की सर्वेक्षण कर उन्हें दूर करने का उपाय करेगी ।

4. <u>सुरक्षित वाहन</u>

राज्य सरकार पुराने वाहनों के परिचालन पर प्रभावी रोक लगायेगी एवं वाहनों से होने वाले प्रदूषण के स्तर को मानक स्तर तक लाने के लिए उनकी लगातार जाँच एवं प्रभावी कदम उठायेगी।

5. <u>सुरक्षित चालक</u>

राज्य सरकार चालको के कौशल में सुधार हेतु चालक प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना करेगी एवं निजी क्षेत्र में चालक प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना को प्रोत्साहित करेगी। साथ ही इसमें सुधार के लिए चालक अनुज्ञप्ति के लिए गुणात्मक परीक्षण एवं कौशल मूल्यांकन के लिए उपाय करेगी।

6. <u>सड़क उपयोगकर्त्ताओं की सुरक्षा एवं उनके प्रति संवेदनशीलता</u>

सभी प्रकार की सड़को (ग्रामीण एवं शहरी) के डिजाईन एवं निर्माण में गैर मोटराईज्ड एवं शारीरिक रुप से नि:शक्त व्यक्ति सुविधापूर्वक एवं सुरक्षित यात्रा कर सके, इसका उपाय किया जायेगा।

7. <u>सड़क सुरक्षा की शिक्षा एवं प्रशिक्षण</u>

राज्य सरकार शिक्षा, प्रशिक्षण और प्रचार अभियानों के माध्यम से सड़क सुरक्षा के संबंध में जागरुकता पैदा करने के लिए प्रभावी कदम उठायेगी। स्कूल एवं कॉलेजों के पाठयक्रम में सड़क सुरक्षा को सम्मिलित किया जायेगा।

राज्य सरकार सड़क सुरक्षा के प्रचार कार्यक्रमों में भाग लेने एवं उसके कार्यान्वयन में विशेषज्ञों एवं गैर सरकारी संगठनों को प्रोत्साहित करेगी।

8. <u>यातायात कानूनों का प्रवर्तन</u>

राज्य सरकार यातायात प्रवर्तन की गुणवत्ता में सुधार लायेगी और केन्द्र सरकार की पहल में सकारात्मक सहयोग देगी।

राज्य सरकार प्रवर्तन ऐजेंसियों को पर्याप्त रुप से प्रशिक्षित एवं सुसज्जित कर उनके कार्यों में गुणात्मक एवं मात्रात्मक सुधार के लिए पर्याप्त एवं उचित कदम उठायेगी।

9- <u>सड़क दुर्घटनाओं में पीड़ितो को आपातकालीन चिकित्सा सहायता</u>

राज्य सरकार सड़क दुर्घटनाओं में पीड़ित व्यक्तियों के इलाज के लिए प्रभावी ट्रॉमा केयर एवं स्वास्थ्य प्रावधान का लाभ सुनिश्चित करने के लिए पूरी गंभीरता से प्रयास करेगी। ऐसी सारी सेवाओं यथा - फस्ट एड, एम्बुलेंस आदि बचाव अभियानों सहित उचित अस्पतालों की सूची परिवहन विभाग की वेब साईट पर प्रदर्शित करेगी।

10 <u>सड़क सुरक्षा सूचना डाटाबेस की स्थापना</u>

राज्य स्तर पर सड़क सुरक्षा सूचना तंत्र स्थापित किया जायेगा। सड़क दुर्घटनाओं से सम्बन्धित डाटा का संग्रहण, विश्लेषण तथा सुरक्षा के उपायों के लिए प्रयास किया जायेगा।

झारखंड राज्यपाल के आदेश से,
रतन कुमार,
सचिव,
परिवहन विभाग

Labour, Employment, Training and Skill Development Department

---

NOTIFICATION

The 6th April, 2016

S.O.06--In exercise of the powers conferred by section 112 of the Factories Act, 1948 the Governor of Jharkhand proposes to make the following amendment in the Jharkhand Factories Rules, 1950 and the Jharkhand Factories (Amendment) Rules, 2015 :-

(1) Short title extent and Commencement :-

(i) These rules may be called the Jharkhand Factories (Amendment) Rules, 2016

(ii) It shall extend to the whole State of Jharkhand.

(iii) It shall come into force from 2nd December, 2015.

(2) Substitution of Schedule-'A' under Sub rule (1) of Rule (5) and Sub rule-(2) of Rule-(7) of the Jharkhand Factories Rules, 1950

"Schedule-A of the said rules shall be substituted by new schedule-A which is annexed hereto"

[Notification No-**7/>k0dk0fu0¼l 'kk0½&1057/2016J0fu0¼e0dk0fu½&385/ Dated-06.04.2016]**

By order of the Governor of Jharkhand,
sd/- (Iligible),

Under Secretary to Government.
Labour, Employment, Training & Skill Development Department,
Government of Jharkhand.

Annual Fee Applicable since 2nd December, 2015

SCHEDULE – 'A'

(Rule – 5)

Scale of fees payable for Grant of licence and Annual fees for Factories defined under section 2 (m) of the Factories Act, 1948

Other than Electricity Generating, Transforming Factories

Sl. No.	Total rated capacity (Power) of the Machineries and Plants installed expressed in HORSE POWER		Maximum number of persons proposed to be employed on any one day during the year for which licence is to be taken.											
			20	50	100	250	500	750	1,000	2,000	5,000	10,000	25,000	Over 25,000
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15
1	Nil		400	1,560	1,800	2,200	3,000	4,000	6,000	7,000	8,000	9,000	9,800	12,000
2	Not Exceeding	10	900	1,600	2,200	3,000	4,600	8,000	10,000	12,000	18,000	38,000	40,000	1,00,000
3	Ditto	50	1,800	2,600	3,000	4,200	6,600	8,600	12,400	14,000	20,000	40,000	48,000	1,20,000
4	Ditto	100	2,600	4,000	6,000	8,600	10,000	16,000	18,000	22,000	26,000	32,000	60,000	1,24,000
5	Ditto	250	4,000	6,000	8,600	10,000	16,000	18,000	22,000	26,000	32,000	63,000	1,01,000	1,50,000
6	Ditto	500	21,600	27,000	28,500	30,000	33,000	42,180	49,740	56,250	101250	126630	197340	292500
7	Ditto	1,000	27,000	28,500	30,000	36,900	42,750	50,040	56,250	70290	110040	135000	216540	304200
8	Ditto	2,000	28,500	30,000	36,900	50,100	56,250	71250	75300	81300	118140	143790	226800	315000
9	Ditto	5,000	36,900	50,100	54,000	57,300	60000	75300	81300	84450	135000	196650	246000	332100
10	Ditto	10,000	54,000	57000	60000	75300	81300	84450	135000	154650	183000	246000	273900	363000
11	Ditto	25,000	81,360	84450	135000	154650	183000	246000	273900	303300	330000	363000	480000	510000
12	Above	25,000	84,450	154650	183000	246000	273900	303300	330000	393000	480000	507000	510000	540000

By order of Governor of Jharkhand,

Under Secretary of Government,
Labour, Employment, Training and
Skill Development Department,
Government of Jharkhand.

अधीक्षक, झारखण्ड राजकीय मुद्रणालय, राँची द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित,
झारखण्ड गजट (साधारण) 11–50 ।